

[illegible][illegible]

मात्मनः शान्तिं ह्यर्चुं नो लोके ॥ स्यात्वा सदा त्मकं मनः ॥ यत्तु कामाश्चैतन्निदिवीदवीयन्तु यदा मर्त्यं ॥ गंधाश्च कर्तुं रुदवीदवा नो हृदयं ग
 नीवाश्चाया रुदवानक्षी मुक्तिं वा ॥ शिवसूनाय ॥ अर्चयि ॥ ॐ मारुदया ॥ अर्चय कस्तमुचिर्तं ॥ अर्चो सायक नीविष्टवक देवुदिकान् क्रमा
 न् ॥ अनिमादिगुणान् कान् मनवद्रूपं कौयमादिकान् ॥ अर्चय त्मकं उगय न्य त्मवैचित्र्यं नूतनं ददा ॥ गुणिमानवधामिह्यासूतमर्कन
 तात्मकीनवर्कशक्तिं न लुना नी मनुयुयामरुषवी ॥ नवकीयी ॥ ॐ शक्तिनी धृष्टी मादिवसानवा ॥ मानिकादीनि वत्तानि नववर्ग्येयता ५
 निमा नवकीया वदुनी नी मनुसं नवकीयुही यश नवा त्मकं सा क सर्वमस्या उद रुनि दधया गुणिनां सा श्रुतिनी रुवद ४३३ द
 दध्या कर्तुं गलय न स्त्रिय काया दध्या कर्तुं ॥ दध्या कर्तुं सत्ययाया क्रिया ॥ दध्या कर्तुं ॥ वासुदवा त्मकं मनुमन्वा वृत्तादध्या कर्तुं ॥ यि
 नादध्या कर्तुं सा विपुनाया दध्या कर्तुं ॥ नाम्ना पद्मावती मर्कं वमा मर्कं दध्या कर्तुं ॥ दध्या कर्तुं शक्तिं नवानां तर्कं नृपा मरुषवी

॥ माजी ना दध्या कर्तुं विष्णु नवताल नृप कमा ॥ दध्या कर्तुं लाकपालानी यशय न्य सुजय सो ॥ एका दध्या कमा सन्निः
 रुनिना सा रुग मयी नृप का दध्या नी साया मर्कं नका दध्या कर्तुं ॥ एका दध्या कर्तुं वा ॥ नृपान का दध्या पदी स
 मज्जि वति सर्वा ह्य गुणिना दध्या कमा ॥ नित्या मर्कं मरुषानी वासुदवा त्मकं मनः ॥ वागी नामान नवमूर्त्तियः
 र्कमा दध्या त्मकं ॥ अर्चय दध्या दध्या सर्वं ये रुद स्या मजाय न ॥ वहुविंशति नत्वा त्मा यदा रुवति ॥ मरुना गायत्री
 सविदुः १ मरुना गायत्री मदनस्मिती ॥ गायत्री विष्णु गायत्री गायत्री विपदात्मनः ॥ गायत्री दक्षिणा मुखं गायत्री म
 रुया विरुषा ॥ वहुविंशति नत्वा नि रस्या मासन पयोत्मनि ॥ दध्या मरुद गुणिना सर्वमनु मयी विरुषा ॥ मरु मरु
 अर्थमर्कं नावसिंह महा मर्क ॥ लक्ष्मी मर्कं मरु वरुण मरु मरु त्मनः ॥ रुयगी वमर्कं दध्या कर्तुं वा नाहं वक्रिना यः

तथा॥ कालवाशिष्ठकृदि न्या कपदि न्यापिवर्जया॥ अथा वसुमुखश्च यो नवमीमाधवी तथा॥ वायुलीवायवी याका यश्चादका
 विद्यानिनी॥ नरश्च सहस्रालक्षी योपिनीमाययाचिता॥ यता नृणां कपी ० सु॥ सिद्धना नृण विग्रहा॥ यका लाल कपाला
 द्या॥ सुलीकन कना मृजा॥ कनवा नायाय लमाधव (ग) लिन्द विष्णु व॥ मधुसूदनसंज्ञा न॥ स्या लिविक मवा मना॥
 श्रीधनश्च रुषी कन॥ यमनारु मृग॥ यन॥ यामादवा वासुदेव॥ संकषे ल एकि विना॥ ययमश्चानि नृद्वश्च स्वनागं मूलः
 यल्लिमा॥ यश्चा द्यकी गदी मीगी रवमी मखी रुली पुन॥ मूलली मूलिस यक॥ यामी स्या देकमी पुन॥ मूकं नान नन्दगेन
 न्दी नवानव कजिद्वि॥ कषु॥ सवा॥ साख न॥ स्या द्यो नि॥ मूवा रुना द्येन॥ रुधवा विश्वमूलि श्व देक॥ पुनृषारु म॥
 वली वलानुजा बाला वष यश्च वष पुन॥ हसा वाना हा विमला नसिहा मूल यरु ली॥ कनवा यो म म्या मा श्वकर्म

स्वलमक्तवा॥ कीर्ति॥ कानि मृष्टि पृष्टी धृति॥ मनि॥ क्रिया दया॥ मधा सहस्रो मद्रो स्या ललक्षी॥ सवस्वमी॥ पी
 तिवति विमायाका॥ कमल स्ववमक य॥ अथा द्यो यरा स्या वधुवाणी विलासिनी॥ विरया विष्णो विष्वा विनयार्प
 नदा मनि॥ अदि॥ समद्वि॥ मुदि स्या रुकि वृदि मकिः कमा॥ यमा मा कृदिनी क्लिना वासुध वसुदा यना॥ यना यना
 यना मृषा संधा यरा निमा॥ म माया विद्युग वव मृत्यो द्या॥ सर्व काम दा॥ यता॥ पि यत मा (अ) ष निषना॥ समिगान नना॥
 विद्यदा मसमाना म्म॥ यंक मारु य वारु व॥ मारु का वल्लूरु देत्य॥ सर्व मन्त्रा॥ यरु क्लिना मनु विद्या विरा (ग) न द्विविधाम
 नु जो ये न॥ मन्त्रा॥ यं देव मारु या विद्या॥ म्मी देव म॥ पुन॥ पं म्मी नय मका ना मन्त्रा॥ सर्व समी विना॥ यं मन्त्रा द्द रुद
 ना॥ सु दिग या हा ना॥ स्य॥ वि० स्य॥ म्मी याम ना॥ नयं नकान मा का॥ स्य विरु को मनव॥ निधा॥ म्मा म्म वि विधामन्त्रा

वश्यशास्त्रादिवादिने अग्निषोमात्मकमंत्रा

विष्णुयाः कृष्णसोमयाः॥ कर्मणा वेदिकतायाः विष्णुयाः॥ समीपिकाः॥ यथा मनवः॥ सोम्याः विष्णुयाः॥ कृष्णसोमयाः॥
मयाः॥ संवत्सरं प्राणवर्गिदिकि॥ रा॥ ग॥ अग्निमिदिकि॥ रा॥ ग॥ सोम्याः॥ यथा॥ ना॥ दी॥ य॥ ग॥ रा॥ ल॥ सर्वे॥ वा॥ य॥
या॥ कि॥ वा॥ य॥ य॥ कि॥ रु॥ ल॥ सर्वे॥ प॥ व॥ द॥ म॥ कि॥ र्ग॥ स॥ द॥॥ कि॥ ना॥ दि॥ द॥ म॥ क॥ र्ग॥ य॥ ल॥ य॥ कि॥ न॥ स॥ ध॥ क॥॥ कि॥ ना॥ न॥ द॥ म॥ कि॥ र्ग॥ ली॥ न॥
य॥ ना॥ द॥ स्व॥ उ॥ दी॥ वि॥ त॥॥ व॥ धि॥ वा॥ न॥ न॥ ली॥ न॥ श्र॥ की॥ लि॥ त॥॥ सु॥ कि॥ त॥ सु॥ थ॥॥ द॥ य॥॥॥ सु॥ द॥ शी॥ त॥ श्र॥ म॥ लि॥ न॥ श्र॥ ति॥ व॥ सु॥ त॥॥ रु॥ दि॥ 10
त॥ म॥ स॥ व॥ म॥ स॥ द॥ म॥ रु॥ श्र॥ मु॥ कि॥ त॥॥ रु॥ वी॥ य॥ श्र॥ र्ग॥ श्र॥ प्र॥ श्र॥ की॥ वा॥ ल॥ क॥ सु॥ त॥॥ क॥ मा॥ व॥ म॥ य॥ वा॥ यो॥ दी॥ व॥ द॥ ना॥ नि॥ कि॥ म॥ क॥
सु॥ थ॥॥ नि॥ वी॥ रु॥॥ सि॥ दि॥ ही॥ न॥ श्र॥ मे॥ न॥॥ रु॥ ट॥ सु॥ थ॥ य॥ न॥॥ नि॥ व॥ म॥ क॥॥ सु॥ ख॥ ही॥ न॥ श्र॥ क॥ क॥ वा॥ जी॥ व॥ ही॥ न॥ क॥॥ ध॥ मि॥ ना॥ लि॥ ति॥ मी॥
स्या॥ र्ग॥ मा॥ हि॥ न॥ सु॥ द॥ वा॥ रु॥ क॥॥ सु॥ ति॥ द॥ को॥ र्ग॥ ही॥ न॥॥ स्या॥ द॥ ति॥ रु॥ द॥॥ समी॥ पि॥ त॥॥ सु॥ ति॥ क॥ व॥ श्र॥ म॥ वी॥ उ॥॥॥ क॥ मा॥ न॥ स॥ व॥

मन्त्रस्य कल्याणकारिणं न विष्णुयाः॥ विष्णुयाः॥ मन्त्रस्य कल्याणकारिणं न विष्णुयाः॥ मन्त्रस्य कल्याणकारिणं न विष्णुयाः॥ मन्त्रस्य कल्याणकारिणं न विष्णुयाः॥
ली॥ न॥ म॥ क॥ थ॥ क॥ सी॥ स्का॥ रा॥॥ सि॥ दि॥ दा॥ यि॥ न॥॥ रु॥ न॥ न॥ जी॥ व॥ न॥ य॥ श्र॥ रु॥ द॥ न॥ वा॥ र्ग॥ न॥॥॥ त॥ थ॥ शि॥ ष॥ का॥ वि॥ म॥ ली॥ क॥ व॥॥ य॥ य॥ न॥ य॥ न॥
॥ रु॥ यो॥ न॥ दी॥ य॥ न॥ रु॥ पि॥ द॥॥ ने॥ का॥ म॥ रु॥ सी॥ कि॥ या॥॥ म॥ रु॥ र्ग॥ मा॥ रु॥ का॥ म॥ ध॥॥ द॥ द॥ ना॥ रु॥ न॥ न॥॥ स॥ र्ग॥॥ य॥ ल॥ वा॥ न॥ वि॥ ता॥ क॥ र्ग॥ म॥ रु॥ व॥ लू॥
रु॥ रु॥ य॥ म॥ धी॥॥॥ य॥ न॥ जी॥ व॥ न॥ मि॥ त्या॥ द॥॥ म॥ रु॥ न॥ रु॥ वि॥ श्र॥ न॥ द॥॥ म॥ रु॥ व॥ लू॥ न॥ स॥ मा॥ लि॥ र्ग॥ ता॥ रु॥ य॥ द॥ न॥ ना॥ रु॥ मा॥॥ स॥ थ॥ र्ग॥ वा॥ य॥ ना॥ म॥
की॥ ता॥ रु॥ न॥ क॥ द॥ दा॥ रु॥॥॥ वि॥ लि॥ र्ग॥ म॥ रु॥ न॥ म॥ की॥ पु॥ स॥ न॥॥ क॥ व॥ वा॥ य॥ र्ग॥॥ ते॥ म॥ रु॥ क॥ व॥ सी॥ र्ग॥॥॥ रु॥ न्या॥ श्र॥ क॥ न॥ वा॥ र्ग॥॥ म॥ रु॥ ना॥ क॥
वि॥ श्र॥ न॥ न॥ म॥ की॥ म॥ रु॥ र्ग॥ सी॥ र्ग॥ या॥॥॥ म॥ रु॥ व॥ लू॥ वे॥ म॥ रु॥ म॥ रु॥ पि॥ श्र॥ दि॥ रु॥ द॥ य॥॥॥ सी॥ वि॥ र्ग॥ म॥ न॥ स॥ म॥ रु॥॥॥ अ॥ ति॥ म॥ रु॥ न॥ नि॥ दि॥ रु॥ न॥
॥ म॥ रु॥ म॥ लू॥ रु॥ य॥ म॥ की॥ वि॥ म॥ ली॥ क॥ व॥ न॥ वि॥ दी॥॥ ता॥ र्ग॥ वा॥ मा॥ नि॥ म॥ नू॥ य॥ रु॥॥॥ अ॥ ति॥ म॥ रु॥ न॥॥॥ रु॥ न्या॥ द॥ क॥ न॥ रु॥ य॥ न॥ य॥ रु॥॥॥ या॥ रु॥ र्ग॥
वि॥ ना॥ रु॥ द्याः॥ की॥ रि॥ ता॥ सं॥ पि॥ ता॥ ये॥ सु॥ त्रा॥ म॥ ता॥ मु॥ र्गि॥ ता॥ ही॥ न॥ वी॥ र्ग्याः॥ द॥ य॥ स॥ त्रा॥॥॥ य॥ रु॥ य॥ स्थि॥ ता॥ ये॥ वा॥ ला॥॥ द॥ द्या॥ र्ग॥ र्गि॥ ता॥ यो॥ व॥ ने॥ न॥ ये॥ नि॥ वी॥ जा॥ ये॥ व॥ स॥ ते॥ न॥ ही॥ नाः॥ र्गदी॥ भू॥ ता॥ श्र॥ ग॥ म॥ र्गो॥ र्गि॥ ही॥ नाः॥ र्गते॥ पु॥
प्रा॥ व॥ ध॥ ने॥ न॥ व॥ यो॥ न्या॥ म॥ त्राः॥ स॥ र्गदी॥ र्गि॥ व॥ न्तो॥ न॥ व॥ त्री॥ ति॥॥

क्रमा ४

ममाशाननमकुलविधिवदतयायायलमनीमकुलवालिनीमकुलस्यलंगर्योलीसुनीतावमायानमायागमनादीयनम
शुत॥रुपमानस्यमकुलोगायनदयकासन।सीखायादमसीधोका॥सर्वमकुलप्रापिना॥यानुकुलासीयदायवमनीवा
ष्टिकमपुन।स्वभावनामिकाहानीमनुकुलरुजमान॥यायलोहपद॥पाद्यवदस्याननु॥कने॥लाकलाययद॥याय॥
खलायावदुदिगा॥वधुर्विनालोहवदलीगमनीसदा।ऊमसम्यद्विपेकेमियत्यवसाधकावध॥भर्तृयवमभेग
वदऊममनिपुन॥पुनपावालगावदवसाधसमाभरुतिनामिष॥कमलरुदिगावधु॥कन्यायामादय॥सुगा॥ल
याधनकरुवधुपुतासुकलरुका॥मन॥यथायादादनामय॥वधुवधुलिखदधुश्चतु॥का॥सममनि
गा॥मकायादिककायाजान्स्वनामायदगा॥मेजा॥नकलायमाकीक्यासिद्धादिकि॥पुन॥सिद्धादीनसिद्धिद

४ सिद्धा रुपात्मा का न नादिरिः ॥ स्वसिद्धः यादिमा न साधकं रं रुयदविः ॥ सिद्धा र्णो वां धवा या का ॥ सा धा म्म सब का ॥ म्मा
४ म्म सिद्धा याष का रुपा ॥ न न वा या न का म्मा ॥ य म्म न म्मा म्मि ल्म रु न क म्म रु ल य दं ॥ व रु व म्म रु व रित्वा का छा नान
व क रित्वा ॥ पूर्व का छा दि विलिखे म्म क व ल्म न नू क म्मा ॥ ल क म्मा म्म म्मा का छ स्व नान य म्म क म्मा नि खे ॥ दि क्क पूर्व दि
ना य रु क्क र्वा श्च रु र्मि र्म ॥ म्म ख न रु ल्म ज्ञानी या द्म सौ व रु य न ॥ रु म्मा ॥ का छ रु क्क रु रु या यो द्म नि खे पूर्व म्मा वि र्म ॥ क
म म्मा न न वि रु रु म्म म्म म्म म्मि रु ग रु ॥ म्म ख म्म ल रु र्म सि द्दि क व रु ॥ स्व ल्म जी व न ॥ उ द म्मा न ॥ रु क्क रु रु ॥ य द म्मा रु ॥
स्व मा म्मा रु ॥ पूर्व रु ॥ यो रु र्म म्मा व म्मा द्म ना द्म ना द्मि र्म ॥ रु म्मा व रु म्मि रु या र्क म्मा रु र्म सि द्दि सा ध नं ॥ पूर्व रु र्म न दी नी न
रु रु य रु र्म म्मा रु ॥ म्मा य द्म ॥ सि धू ना र्म ग म्मा पा व न व र्म ॥ उ द म्मा ना नि वि वि का नि वि ल्म म्म ल रु र्म गि व ॥ य द म्मा य रु र्म रु

[illegible]

गानि पूजयेत् ॥ सुखादीन् नदीनां निदुःखयुक्ता लब्धविह्वलमलमन्तुः शिरुफानिर्धयथा षष्ठसर्व ॥ आनीः
 दौर्गतिदिङ्मातीनीं मंगलाचार्ययुक्ते ॥ निवेयलुषपागुषयनिकायनमानमः ॥ आलिम्मा माटकी मूङ्गतिः
 लानिः पावमषया ॥ कल्लुकुर्कगुमाषी श्वदीजानी कुवकमालि ॥ रुत्रियालिसमय्युक्ते वरुवाङ्गयदजिकधवलितिः
 विधयागानी दिङ्गयुवोदिङ्गिः ॥ पुणमाशेनेमाने श्ववातीवागीमनामकिङ्गुतानिपितवायका नानावक्रानिः
 दीरुत्रिः ॥ सफानामपिवागीर्णदवताः ॥ समधीविताः ॥ रूनेयः ॥ स्यल्लोङ्गितिलरुत्रियायधिशकवः ॥ सानाः ॥ पिहयः
 महिलाः ॥ सुल्लः ॥ पविक्कीर्तिताः ॥ कर्नरुलाजायकयो नानिकेलायकानिर्क ॥ गकुपिह्वना गत्या बुद्धः ॥ पद्मः
 कर्न ॥ सायूपमर्नगवोयविष्णुवस्याङ्गुलायनी ॥ कर्नालोके श्ववस्थायि विधिवद्विङ्गवद्वलि ॥ दीकायामलिधकेषुनव

स्य बहुवर्षीयकलायतन ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
दिर्गपुनियथा न्याय मखीसूत्रानि पाठयन् ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
खलैर्नावदीनिर्ता कृष्णानीयादृशं वृषं मेखना नाशुतादृशं कृष्णमाभखलादिप्रा मखीमागुता ॥ कमा उ
स्रधाया मगा रूपा दकाद्रो गुलसामिका ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
वद्याग्निनयनी गुलाशा मखलाना मखीवेदक ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
सानमन्यथा मखीगुलवसायथका कृष्णदिर्गपुनियथा न्याय मखीसूत्रानि पाठयन् ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
गागुलाशा कृष्णवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता

कृष्णमनुतानुदमां गुलाशा विष्णवाभयना रूपा मखला ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
ग ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
ये कृष्णादीना दका मखी ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
सुलादावयना लंष्ट्या ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
क नोसिमसूत्रसिनिर्ता ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
मिर्गवदी गुलापाता ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता
कृष्णनारिकु वरूयन् ॥ अथ ॥ सुवर्षीयस्य काष्ठाद्रोद्धयमागतशब्दास्य बहुवर्षीयस्य काष्ठात्पविलासुयता

यत्॥ मरुमाहमिर्नकुलं मरुदसंयुवकं॥ मरुदा मरुदसि माहं हस्त माहं सरुमक॥ दिरुस मयं लक वरुहः
 सुम दीविर्न॥ मयलक वषट्कं कोशामरु कर्तुं स्मर्तुं॥ पकरुस मिर्नकुलं मकलक विधीयते॥ लकाणां दनं कया
 वलावदस्तन वदयत्॥ दमरुस मिर्नकुलं कोटिहामा यिगस्यते॥ सर्वे सिद्धिं कर्तुं कुलं वरुवस मया दत्तं॥ यत्तु यद
 थानिकुलं मय द्यारं मरुपदी॥ मरुकय कर्तुं गामं वरुलं गानिक कर्मणि॥ कुद मा वलयां ४ कुलं वरुवस मय मनिर्न
 । पुरिदं वागम मने कुलं मय ममी विर्न॥ विद्याणां वरुवस मया द्या वरुलं लमिषाणां वरुणां नाम देव द्यारं मया
 मया ममी विर्न॥ वरुवस मरु मय वी कविर्न मरुता किका १ कुलं मया वरुप मानी या त्वम मय कर्तुं वरुप १॥ या वी निव
 ४ ममाखानं वा दूदकि (ममा मया ३ उद नं कुलु मियु कं यानि ४ मा वी कु पश्चिमा निर्न नमि कि कं दम म सुलिल वा मः

लुका

मा वरुवत्॥ रुस माहं लतक यो द्यारि ४ म (मरिर्न) मरुगुला सध मय क वरुवस मय म नश ॥ पर्व या कानि कुलु नि
 कथा मय कय वी नश ॥ पकल य मय वी या (ग वरुमा (न व मी ना) श्री पदी नि नपा श्री न मालि धे क त मय
 वरुगट्टी लो विरु रुद्र स माहं पादु लता पुनशा विन ल्य (न रु वं कु ल) द्यदी ते न रु रि रु वत ॥ प को (न न मि न ४ कु
 ४ ४ मफला गमिर्न मय वी वेदी ल्य (ग न विस्तान ४ कल मय पवि का कि न ४ मय कल ममानं मया मय मय मय पक
 ल्ययत्॥ कनि धी गु लि मान न मयिषा नि मय मय वी वेदी मय विधान वा रु (ग न क न क मिका वि दधी न वरु स
 मया पको (न नारि ना वट ॥ न मय वानं नि रुद्रा (ग वरुम द्य मता वरु ४ मय (न न क न पवि ना यला नि पवि क ल्य य
 । मय लामय वरु ४ मया ल्य नि ना द्यो ममान न ४ द्य मय लय य ४ क रं गु ल व द्य गु ल ४ क माहा गली य गय मा (न

[illegible]

॥ रुद्राचरितः ॥ वक्रो नानाविधश्चिह्नः सर्वदृष्टिमान् रुद्राः ॥ द्वात्रिंशत्तन्त्रवर्णानि ॥ आरुद्रकाः समीपिनाः उपपन्न
 ॥ पीतवर्णाः काष्ठाभ्यामिति ॥ मित्रावस्वावदिः ॥ कुर्याद्विद्वत्तन्त्रकासिनाः ॥ कुमारः ॥ महोत्सववर्णारुद्रः भक्तसाधन
 ॥ ॥ वक्रो नानाविधश्चिह्नः सर्वदृष्टिमान् रुद्राः ॥ द्वात्रिंशत्तन्त्रवर्णानि ॥ आरुद्रकाः समीपिनाः उपपन्न
 ॥ पीतवर्णाः काष्ठाभ्यामिति ॥ मित्रावस्वावदिः ॥ कुर्याद्विद्वत्तन्त्रकासिनाः ॥ कुमारः ॥ महोत्सववर्णारुद्रः भक्तसाधन
 ॥ ॥ वक्रो नानाविधश्चिह्नः सर्वदृष्टिमान् रुद्राः ॥ द्वात्रिंशत्तन्त्रवर्णानि ॥ आरुद्रकाः समीपिनाः उपपन्न
 ॥ पीतवर्णाः काष्ठाभ्यामिति ॥ मित्रावस्वावदिः ॥ कुर्याद्विद्वत्तन्त्रकासिनाः ॥ कुमारः ॥ महोत्सववर्णारुद्रः भक्तसाधन

सितेश्वरशक्तिः पूजयन्तानि स्वस्तिकाः मिनिवापिनः॥ पाकृपाकनेवमप्येन॥ मयमचसमापयत॥ नवनारुमि
 दंपाकं मधुलं सर्वसिद्धिदं॥ ॥ यं चार्द्रमधुलं पाकं भक्तभक्तिकवर्जितं॥ दीकार्यं देवपूजार्थं मधुलानां बहुद्वयं॥
 सर्वतन्त्रानुसारं पाकं सर्वसमृद्धिदं॥ ॥ ॐ तिशासावदातिलकदीकाङ्गनामरुणीयपटलः॥ १ ॥ अथ श्रीः
 कांपवशुमि मन्त्रिनां हितकाम्या विना नयानलस्य त सर्वमलरुलं यतः॥ कानं दिदीयता दया कृपा स्यात् २२
 यतः॥ तस्माद्दीकृतिमाया का दानिके कुरुवरुदितिशवष्टविंशसा सन्दिष्टा क्रियावत्यादिरुदतः॥ क्रियावतीव
 मयी कलाभावधमश्रुति॥ ताः कथं लेखकथा नैतकृमि नैयदावहाः॥ दानिका विधिवत्स्नात्वा कृत्वा पोषोक्रि
 तीः क्रियाः॥ या या यलं कृतामीनी यागार्थं यागमधुना सर्वम्यविधिना कुरु साना या विधाय यः॥ दानमकाम्बुः

न ४

रिपाकं दावपूजा समावयन्॥ उद्धोदस्ववकविद्युमहालक्ष्मीं सवस्वतीं॥ तता दक्षिण आखायी विद्युं कुरु मम न्य
 तः॥ तयाः पाश्वरगतं गायमूनपूषवा विक्षिः॥ यदुल्या मद्येयं दक्षु प्रतिदावमिति कमात्॥ अन्नकवदनि कन्दादि
 वा दृष्टवला कनात्॥ दिद्यान्त्मावयद्विद्या नकादिश्चानविक्रगान्॥ पाष्ट्रि या नैकि सिद्धो मा निनि विद्या निवायय
 न॥ किञ्चित्स्वभनवा ममा र्वा यदुलीलं ययमुत्र॥ मूर्गं संकावयन्नकः॥ पविने दक्षिणां दिवा अर्थादि निवा स्त्रीणां
 न वक्रा लंसममद्येयन्॥ येव गद्या येना या स्या पाकयथागमलुपी॥ बहुष्यथार्कान् रुद्रि विदधादी कणादिशि
 ॥ वीकृणं मूलमकुण मवग पाकल मर्त॥ तनं वता ननं कृपा दमो नायकल मर्त॥ वन्दे नाशुन कप्यु नैदुः
 पय दननं सुधीः॥ किं कुरुत सफजफान् मनाश्चना॥ लाकुरु ननसिद्धय रसमपूजा कृणा कनाः॥ विकिवा ॐ निसः

विकिनात्

निष्ठाः सवे विद्योद्यना ननाः। मूकुरु फेन द कोलां मुखिना मा ऊय द तान्॥ वी मस्यदिमिव द न्याः सनायय
कल्ययन्॥ पूष्ठा रुवाचयित्वा व वा फलान्नपविता यव। उकषुमलु लषर्क वदिकायां समालिखेत्॥ विजम्ब
आमनं मेम्मी पाकू खावा पय द्यु खग वदयद्या सना मोमी समादि नजिन विद्युयः। स्फापय दक्षिणे सागे पूजा द
वालि दमिकः। सवासिना मूसं पूष्ठा सवा कूर्कसं मारुनं॥ पुकाल नायक वयाः पातुं पत्रा निव मयन्। धृत पत्र २३
लिता न्नीयान् स्फापयत्य विनः। रुतान्॥ दपो लं वाम नंदुर्गं गाल वलं मना रुवं। मंगलां कृव पातानि स्फापयदिः
कृदमिकः। कता शूलि पृष्ठारुत्वा वाम दक्षिण पातयेत्। नत्वा गुरु गले मारुं रक्त मुद्रि मथा वज्रं॥ कव न्यासं
समापय कुर्यात्। लाल र्पे नतः। उद्धोद्ध मस्तु मनु न विद्युय नपि दमिकः। न न संजु निर्गं गाल वलं कुर्यात्। म न न

॥ अथ ब्रह्मनामानं यत्र नान्यथा जयते ॥ योग्यकन विधिमादिन कुल समाहितः ॥ कावले सवेरुगानो नवा
न्यथिव विनयः ॥ वीजरावेनलीनानि ब्रह्ममात्मनमात्मनि ॥ ततः ॥ १ ॥ अथ दहं वायुवीजनवायुना ॥ वक्रिवीज
ननेन वसं दहं सकलान् ॥ विष्णुस्य कदापि नान्मनामनामना ॥ अथाथ दहं दहं मायादहलमसक
॥ आत्मलीनानि तत्त्वानि स्वस्मान्पापयथुया ॥ आत्मानदहं माभूजमानयनयमात्मनः ॥ मनूनाहं सधदस्य कयात्रा
साधिकनतः ॥ अथि शुद्धा देवतानि न्यस्य सकस्य सकुवित् ॥ आत्मना मुद्रिवदन दहययथाकमातः ॥ विष्णुस्य मूलः
मकुलपात्न्यामयथाविधि ॥ विदधा नारुका न्यामं सकन्यामं मनकयं ॥ अगुष्टे दिश्युलीषू न्यस्य सकं ॥ सकाकिरि
॥ अमुकं नयान्यस्य कया कालकयादिकं ॥ दिनकनं ववधीया कृष्टिकारिः ॥ समाहितः ॥ दहयिष्य विनयः ॥ दह

मकुंस्तुतःसुधीः।द्वययायनमःपूर्वनिवसवक्रिवल्लला॥मिखायेवषठित्यकं कवचायदमीविती।नगुरुपायवा
षठस्य।दम्मायदुक्तिकिमात।षठसुमकानित्यका।षठ।अधुनियारुयत।पेवाज्ञानिमनायस्य।रुतनरुमनीय
रुती।रुगहीनस्यमकुस्य।खनेवाज्ञानिकल्ययतु॥रुल्लल्ल।कविधिना।न्यामानन्यानुसमावतन।कल्ययदात्म
नायेरुपी०धर्मादिदिःकमातु॥मू०।व्ययमयाविद्वान्पादकि०धनदेनिकः।धर्मज्ञानमवेनायमेव्यय २४
यस्यरुकमातु॥मुखपाश्वनाशिपाश्वेधुधमोदीनयकल्ययतु॥धर्मादयःस्मृताःपादाःपी०गा।गानिवायेवा।मूः
नकंदयययमे।मस्मिन्सूर्येन्द्रपावकाना।पश्चिमस्वकलान्यस्य।नामायकवयुर्विकाः।सन्नादीकीनगुणान्यस्य
रु०।यवगुवृल्लमः।आत्मानमकनात्मानंयवमात्मानमकुडा।हानात्मानंयविन्यस्य।यस्यपी०मनककः।यवय

य।
रुमंपी०।विकथयिहदवता॥मदाःमदनेविबिबदयोस्तुपनमावतन॥रुखमकुमूनापाश्ववामगावक्रिम
कुला।माधनस्यपयद्विद्वान्विद्वदुतसधामये।गायेःसुगन्धिपुष्पाद्यैःयवयल्लयथाविधिः।आधवेपावक
रुखसूर्यगायसधाकवी॥स्मनद्वद्वकैवन्त्यार्णकलाकाकषनकमातु॥मूलमकुंरुयस्मत्वा।न्यस्यरुस्याः
मममेविरु।रुमले।गशिर्षयुञ्ज।रुस्कार्ण्युदयन्नयः।रुपाद्विधीयथान्यार्थेयजिकादवगाधिया।मकुमकुः
मसंबकु।कवचनावगुणावा।धनुम्यासमापायवाधयल्लसुमदाया।यकि०।यु।कलीपाश्वमाधयादिः
पयुवयतु।किंविद्वदयोमूर्संगद्वपाकल्यसुसियारुय॥मू०।स्यारुवकः।कार्येपाश्वसावमनीयक॥मू०
त्मानंयागेवसूनिमेलुल्लपाकयकुवः।पाकलीपाश्वगायनमनूनान्यानापिकमातु॥न्यासकमणयल्लस्वध

मोदीन पूरुय रुकः १॥ पूषा ३॥ पी० मनर्क गस्मि श्रय वयवर्ग ॥ यश्च कलः ४ पूनः ४ कृष्णः ४ लुमनन्यधी
 ॥ उरुमाङ्ग रुदाधा व पादसवेङ्ग क क मात ॥ विनानि वयं गी धा यै न य वा नै ४ समवेयं ॥ रुतूप दिष्ट विधि
 ना ॥ शेषमस्तमाययं ॥ सर्वमस्तमाययं ॥ शिवा कली कनवा विना ॥ विष्ट क मा यै पा क्रि ॥ १॥ यत्र यली यथा पूवा ॥
 ततस्तन्मल्लमका गन्धा ३ ॥ साधु पूरुय ॥ गालिहिः १ कलिका म ॥ साधु पूरुय पवि त लु १ ॥ मूल कल पुनः २५
 यद्वा नास्ती यै क क विना ॥ कर्त्तुमस्तमयं य के न्यस क वा म ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥
 ॥ साधु १ कृष्ण मिला नै १ ॥ शिव नै १ ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥
 साधु १ कृष्ण मिला नै १ ॥ शिव नै १ ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥

साधु १ ॥ गमा लम्बा मला रुनी लम्बी ववधा विनी ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥
 पतस्मिन् मलिमल्लुपी ॥ यश्च कलः ४ पूनः ४ कृष्णः ४ लुमनन्यधी ॥ यश्च कलः ४ पूनः ४ कृष्णः ४ लुमनन्यधी ॥
 कली ॥ यश्च कलः ४ पूनः ४ कृष्णः ४ लुमनन्यधी ॥ यश्च कलः ४ पूनः ४ कृष्णः ४ लुमनन्यधी ॥ यश्च कलः ४ पूनः ४ कृष्णः ४ लुमनन्यधी ॥
 रूपान्धमोदि कान् यथ ॥ गान्धु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥
 यत् ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥
 वमय कल वान् ॥ पवा म द लु वी जा र्था ॥ कर्त्तुमस्तमयं य के न्यस क वा म ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥
 वस्या हि विष्ट ॥ १ ॥ यथ सत्वादि कान् गुणान् ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥ साधु पूरुय पवि ॥

न॥ संसृपयं लुलधिया विधिवत्कल्याणाशिना। गनः कर्मनिर्मलन कोमयुग्मन वरयन्॥ मूलनमूलिमिष्ट
 मिन दूयाया कल्याणाशिना। आवास्तुपुत्रयं रुह्या मनी मनु स्य दवर्गा॥ मूलमर्ग समथा यो सपुत्रावत्सना
 सधीः। मानीयनः स्वस्वना नासिकाबंधनिर्गर्ग॥ कनकमालकाकाः केवलयं पृष्ठाप्यवयन॥ स्यात्तव
 न॥ धनं मूलो मावाहयत्सधी॥ संसृपयं सन्निधानं सन्निधानं मनु कर्तुं। सकली कर्तव्यं पश्चाद्विदधा दवयुक्तः
 न॥ मूमनी कर्तव्यं कर्तुं कर्तुं पयवमी कर्तुं॥ कमायनानि कर्तुं स्वमृष्टादिः समादिनः। म॥ थायवावान् २१
 कर्तुं न कर्तुं विसृज्य गतादिकाः। आगर्गं कुमलयन् निर्गदयतां युवः। पाश्यामासुतं दया दवस्य दयः
 या पुनो। पनश्चा मा कर्तुं विष्णुकाकारिनी विनी॥ स्यामर्गं वदन् दया दावमनीयक॥ मानीयवर्गः

कर्तुं ले सुदुर्कं न कर्तुं विद्विः। म॥ योनिः। म॥ रुतामृष्टि निनामर्गं लयमि कः। गन्धपुष्पाकनयव कुमायानिलसर्प
 पः। स॥ दर्वः स॥ वेदवाना म॥ तदर्थं मूदीनिर्ग॥ सुधा लनातः क॥ क॥ मधुपकं सुधा म॥ म॥ अर्थं दधि मधुमिष्ट म॥ त
 दुर्कमनी विद्विः। तने वमनूना क॥ य॥ द॥ विवावमनीयक॥ गन्धादिः कावयत्सुाने वाससी पविधापयन्। द॥ या
 य॥ पवीर्गं व॥ हावायारुवलेः स॥ रु॥ न्यासकमलमनूना पुटिर्गं मोहका क॥ व॥ म॥ रु॥ यो दर्वं गन्धाद्यैः व॥ म॥ कीनः
 पुनववेयन्॥ गन्धश्चन्दनकपूत्र काला गुग्गुलिनी वितः। कमल क॥ व॥ व॥ कुमुदकुलमी द्यय। क॥ तिद्वयक
 त॥ क॥ क॥ ल॥ ल॥ व॥ म॥ का॥ ल॥ ल॥ क॥ न॥ म॥ न॥ पु॥ न॥ ग॥ पा॥ ठ॥ ला॥ ना॥ ग॥ व॥ म॥ की॥ म॥ न॥ व॥ ध॥ क॥ रु॥ का॥ र्ग॥ पा॥ व॥ नी॥ न॥ व॥ म॥ लि
 का॥ म॥ ग॥ म॥ की॥ स॥ का॥ व॥ प॥ ला॥ म॥ म॥ क॥ म॥ लि॥ का॥ धू॥ रु॥ व॥ स॥ रु॥ की॥ विल्व॥ म॥ रु॥ न॥ म॥ नि॥ प॥ रु॥ की॥ म॥ न्या॥ न्या॥ पि॥ म॥ ग॥ म॥ नि॥

निरिहया श्रद्धायेऽपुन वदयन् ॥ गीथाश्रयित्वापी ० मू मूलो वक्रि वि स क्रूयन् ॥ मू व नि छ न ह वि षा विकिन् ॥
त्यभिनादलि ॥ दव ना या ४ या चे दया ग न्न प षा क ना चिर्त ॥ क ना नि व श म् दु ह्य ॥ आ धा यि त्वा मूलं पुन शर्प
वा यदाये ४ सी पू श्र द न श च्छु न वा म न ॥ क षा न स क ला भि र्ग ॥ गी व ल व नि व द य न ॥ स रु स व ह्या स रू य
मूल म न्न म न न्य धी ॥ गी रू प स व स प लो द व ना य स म य य न ॥ क न ४ गी रू दि नि गू व्रि कि न य व स वि २७
ग ॥ रु म व क्ता दि र्ग य क ॥ क क री गा य पु नि र्ग ॥ स रू पा न रू यी र्ग रू रू रू रू क धा नि र्ग ॥ धा व नू य
वा शि मा रू यी प रू य य रू दे व गी ॥ व ना स न न स पू श्र ना मा य य रू न ४ पु न श व क्ति लो क या ला र्ग नाल म
क न वा वि ना ॥ दे वा ना ना रू व य न न ४ प नि व ह्य प द कि र्ग ॥ मू मू मू स मू वा य य थ य व नि व न य न ॥

मू रू च रू या र्ग धा यी व क्ति न रू मि ना स न ॥ क न ध र्ग रू क न व क्ति ॥ गी रू व ल व रू य य न ॥ मू मू ल कालि र्ग या
ग न व ना स म या दिक ॥ क रू लान् मालि र्ग रू ना न् मूल म क्ति म क्ति ना न् ॥ प म रू ना श्र दे म र्गि नि ४ क्रि या क्ति म न रू ॥
य न ॥ प काला या रू व द न् पि धा य क व वा व ना ॥ या रू रू मूल म क्ति ल द नि क न्द य रू य व न् मू व ना श्र न स रू नि न ॥
य रू रू कालि या व र्ग ॥ मूल न य रू रू रू क व व ना व ना य य न ॥ मू मू रू क क रू माली ॥ मू ल वि धि व रू न ॥
ग वि रू श्रि धा रू ग म क द वा य क ल य य न ॥ मू मू म ॥ मू प रू रू या द य रू द नि क ४ म यी नि षी ल मा रू रू रू रू वि
रूि ना व म न रू त ग रू वा रू नि षा मा नी य स क ली क ल य द नि क ४ गाल प मा र्ग रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू
य न काल रू द य रू वि षा य मि य ना म नो द कालि ॥ आ धा स मू न ४ क न्द काल वि स रू य न ॥ य थ वि धि रू मा वा रू ॥

[illegible]

नृच उक्ते वी कृष्णदिशिः। निमिषिमा लिखन्नेखा रुदाया युद गगु लाः। या गगु लां स्मृता यवा मुकुन्द
 न पुन न्यवाः। नखाना मुद गगु लां वृक्ष वेव सन न्यवः। मृथवा घका नवरु त्रिका न कुरु स लिख न्। संवो न्यः।
 मृथवा न न्या गपी ० मथा चैय न्॥ वागीश्वरी मृथवा नील न्दी व वपु निरु॥ वागीश्वरी मृथवा मृथवाः
 न ४ पृथु य न्। मृथवा का नादि मृथु न् यदा (गो नि य (ग रु र्) ॥ मृथवा व द्धि पा नु न् कृया दा न् प वि ल्य उ न्॥ मृथ
 या र्क यथा न्या र्क य नि का वी कृष्णदिशिः। उदयो वेन्द वा नि र्ही सो म म्थो र्क स्म व न् व सा ॥ या रु य द्धि वी रु नः
 व न न्या पा व क न दा ॥ ना न न म कि र्क म न्नी (ध न् मृथवा मृथवा क र्क) मृथवा व कि र्क प न्था रु न् न न् वा व गु ठि र्क ॥ मृथ
 र्क निः प वि ल्य म् कृष्ण प वि ल्य नि क ॥ य द्धि र्क न दा ना व म न्ना च व न पृथु क ॥ मृथवा ना नि मृथवा व द्धि मृथवा

कर्मकी कलशानिवर्ती जाधिया दद्या या ना वन विनिःकिपन् ॥ यश्चा द्दवस्य दद्याश्च दद्या दाव मनादिकं । कालयः
 मनु नानेन नमस्क्रि मध दक्षि कः ॥ विर्ति गल रुन दह यव य मा लु दी यो वा सर्वे का लप य सा रु म न्ना र्य पायुः
 दी विरु शः मूर्ति पु कलि न वन्द जा न व दं कृ ना न न ॥ सर्व लु व लु मन लं स प्रि द्ध वि श्व ना मूर्ख ॥ उप नि ष्ठ न वि धि व
 मनु नान न पा व की षा वि न्य स द्वा ल्म ना द ह म न्क र्जि द्वा द वि द्क र्ज ॥ लि ग पा य मि ना व कृ द्वा ल न न र्ष स व र्ग ॥ ३१
 व द्वा रा यी म र्म य कः सा दि या नाः स वि न्द व श व ध्म म नाः स मृ दि द्वा जि द्वा ना स फ र्दे नि कः ॥ जि द्वा क्का नि
 वि धा य का गु ल रु द न क म्म स ॥ हि न द्वा ग न ना व का क ष्म ना मु य रा म ना व कृ द्वा नि व का व सा वि द्वा या
 ग क म्म स ॥ य द्वा ना ग म्म व ध्म ना रु सी या रु द्वा ला हि ना ला हि ना न न र्द श्व ना धू मि नी व कृ ना लि का ॥ ना क स्या न

स ना व कृ वि द्वा का म्म क म्म स ॥ वि श्व मूर्ति सु लि मि न्ना धू स व ध्म म ना क वा ॥ ला हि ना ना क ना ला र्वा का
 ली ता म स्य र्गी वि ना ॥ ए नाः स फ नि य क्क कृ व क म्म स म कि रि श स व ना म स मा रुः स्य क्ति द्वाः क ल्या ण
 व कृ सः म्म म ल्य पि रु ग श्व र्द य कृ ना ग पि ना व का श वा क साः स फ जि द्वा व मी वि ना मृ धि द व ना श व कृ र्ग
 म न्म स्य रु ना व कृ न व र्म ना ॥ स रु स्या विः स कि पु र्ण उ नि ष्ठ पु न्न षः पु नः ॥ धू म या यी स फ जि द्वा धः
 नू द्वा र्ग नि क मा रु ॥ य उ द्म न व षा का जा नि रिः स रु स य ना श मू ली व र्धे न नो न्य स्य द्वा नि का जा न व द सः ॥
 मू र्धा ना य श्व क द्वा कृ टि पा श्व न क ष्म वा ॥ पु द कि ण व म्म ना स्य द्वा कृ ना य था क र्म ॥ ना न व द्याः स फ जि द्वा रु द्वा
 वा रु न र्ग कः ॥ म्म द न र्ज स र्ज न्यः पु न र्द श्व ना न वा कृ यः ॥ को मा व न जाः स्या दि श्व मूर्खा द व मूर्खः ॥ म्म नः ना वा

[illegible]

स्वा॥ निमः ४५ तापय दद्रो दहनायाय दनि कः ॥ तदयमधामूलानि ॥ आधय कये धा कमी ॥ गृहीत्वा वामं कन्या कये
दक्रि (नमो) ॥ पुनः ४५ तापय मन्त्री दहनायाय दनि कः ॥ आत्मना दक्रि (नमो) ॥ गृहीत्वा वामं कन्या कये ॥ आशः
स्वाली मथा दाय या कये दक्रि वा विना ॥ तस्या मां विनिशक्रिया संस्कृतं वी कला दिक्रि शानि वृक्ष वाय दक्रि वा नु दयानं
ष निवमयत ॥ ८६ दतापन मुदिष्ट दनि कः कुरु वदिक्रि ॥ संदीपाद कुरु युगल मां कुरु दान लक्रियत ॥ गुपुद द
यम कुरु पविनी कन्या विदी ॥ दीपेन दहयु (मन्त्री) वा शस्य सवमेना ॥ आ (मन्त्री) विम कुरु दहयु मरि शो नममीनि
नी दहयु कलितान् दहनायाय दनि कः ॥ आ तदयमिना न्याय दहनायाय दनि कः ॥ गृहीत्वा दहनायाय दनि कः
न संसा श (मन्त्री) ल म्प (नमो) ॥ म्प गुपुद कनिशक्रिया दहनायाय दनि कः ॥ दहनायाय दनि कः ॥ दहनायाय दनि कः ॥

य॥ तद्वद्वयमर्जुन कृष्णायामात्मसंमुखं ॥ यत्तत्संपूर्णं कुर्यात्संस्काराः षड्विंशतिविधाः ॥ यादवमार्गं प्रयत्नं
 यद्वयमर्जुन कव ॥ निष्क्रियारोगोक्षोक्तत्वापक्रोशुकुनवोस्मयन् ॥ वामनाजीमिर्जिता ॥ गद्यक्रि ॥ अपिहलाः
 यनः ॥ मध्यामासुषुम्नां धात्वा कुर्याद्दामयथाविधि ॥ भूवर्णदक्षिणाङ्गा ॥ दादायाईददागुवू ॥ रुद्रयादभय
 स्वाह ॥ यद्विहलावनो वामनस्कृद्यदाय वामवक्रिविलावनं ॥ रुद्रयादथसामाय स्वाह निद्रया ३३
 ध्वना ॥ मध्यादाईसमादाम वक्रो लविलावनं ॥ रुद्रयादथात्रिसामाया स्वाह निद्रया ध्वना ॥ द्रुमर्जुन
 भूवर्णाईरागादाय दक्षिणाङ्गा ॥ रुद्रयादमयसिद्ध कर्तस्वाह निद्रमूख ॥ इति संपादनयज्ञा ॥ गद्या
 याचा इति कर्मात् ॥ इत्यत्रिनवकुर्वा कुर्यादुष्टादनं गुवू ॥ सगानाशिया इति शिवाईनरुद्रयात्पूज ॥ रुद्र

[illegible]

यावत्सर्पिस्तुता॥ नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 लाटययोनं वा का न समाधिवावधि॥ नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 कर्तुं गुणं संपादय वधि यद्विद्या नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 स्वर्ग्यदीर्घा संपादय भावनी॥ ध्यायद्विष्टा नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 कथं संपादय कति काटि स मयली॥ निव न किमर्थं यद्विद्या नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 सा॥ गच्छतीति ध्याय मां त्रैलोक्यं दिवा पयसि वावधि॥ वादि सा कयल सु श्रुतं संपादय कयल सना॥ नैषद्यं मय ययं वादि
 नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः

ननु विद्या नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 पुनरु संपादय॥ विपुलं कयल संपादय कयल सना॥ नैषद्यं मय ययं वादि
 वनाय नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 वमात्मना न किं वधि ययं मयि वा॥ युद्धं कयल संपादय कयल सना॥ नैषद्यं मय ययं वादि
 नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः
 ननु विद्या नानुनालोपि पर्यन्तं यन्ति कथायातिष्ठति॥ नारुः ४ क० वधि या का विद्या नानि कुरु ४ पय॥ कलाः

निपेवगशानि नसमानिमनीविरिः। नसममधुद्वान्मकमानुमदाहर्न॥ दधिपुसुनिमार्गस्याल्लाजास्यमु
 हिसमिगा। पथुकोस्तुमाणाः॥ १॥ कवापिन/थादिता॥ गुरुमालाद्वमार्गस्यावृक्कवापिनथासुना। यासाद्व
 प्रमानस्यादिः॥ पूर्वोवधिः॥ २॥ न॥ ३॥ केकपुपुषातानि तथापुपानिकल्पयन्॥ कदलीरुलनार्ग
 क॥ भाविदुधमाहुवर्गवधुः॥ खलुपनसंदमधाहर्न॥ मृदुधानालिकवागिखलुतानिविधुवृद्धाः॥ निधोहर्न
 लवेल्यकपिलंखलुगिद्विधा॥ उर्वोहर्नल्लामकथिर्गखलुगिद्विधा॥ रुलान्यन्याखलुनि समिधः॥ ४॥ मृदुमाहु
 ला॥ दूवोहर्नसमुद्रिष्टगुरुवीवधुवसुलाः॥ वीहर्नसमिधमाहुः॥ ५॥ मृमासाघाघवासुधि॥ गुरुलास्यसुदक्षीना
 ॥ कादुवामुहिसमिगा॥ ॥ गधूमवककलमाविरितामुहिसमानगशानिलाश्वल्यकमाहाः॥ ६॥ सधपासुप्रमाणका

मुकिप्रमाणलवणमवीवान्यपिविशिष्टा। पूर्ववद्वमार्गस्यायाम० कसमसमर्ग। वन्दनागुरुकपुवककुवीक
 मानिवागिकिठीवीरुमानानि समुद्रिष्टानिधमिके॥ ॥ वंशानवसिर्गवायसमिधामधुदमिक॥ गयानमाशु
 मधुनिषर्ग॥ मधवमधुमासाकुरुद्रयादुद्रविपश्चिस्ववकर्मसुक्कुरुलामरुवद्याधिन्नमधुसुदीविनीना
 सिकायामन॥ पीठा॥ मसुकधनसंक्रय॥ खलुसिन्दुववालाक॥ कुरुमकोयसन्निरु॥ सुवर्गवगमावर्ग॥ ८॥ मारुन
 ॥ पत्रिकीरिग॥ रुवीवाविदुहमीनुधुनिर्वक्रिः॥ गुरुवह॥ नागवमकपुनागपाटलायुधिकानिरु॥ पद्यन्दीव
 वकलानसमिधुगुरुलसन्निरु॥ पावकस्यगुरुगर्ध॥ कुरुकुरुवदिरि॥ पदकिगास्यककलागुरुगुरुगनि
 खिन॥ निखा॥ गुरुदयकमानेस्यनास्यस्यापिविशिष्टा॥ कुन्ददुधवलाधुमावर्ग॥ ९॥ क॥ गुरुवह॥ कपुव

ॐ॥ मरुतवेनादिकं सर्वं विदधात्युर्वेवर्माणां विन्दुयुक्तमिमांसायाः संहृत्या प्रकिला मरुतः॥ विद्यात्युर्वोदिता न विद्या
न जाकादीन इमं युगान्॥ ८॥ यावत्तु मय यथा दवी वा ग्वत्तरा भुक्ता॥ मरुतमर्जुन विग पात मय यटं कं विद्याकः
न न विवर्तय धनी कि नर्गा॥ मरुतं नृमो लि मय व विन्दवासी वत्तु श्वयी पृथ मरुत मरुत व नर्मा॥ न्यासावेनादिः
कं सर्वं कृणात्युर्वो कवर्माणा॥ ना ना कृतिः कला रि म्म य म साध क मरुत मः॥ वत्तु श्वानी वसी युक्ता न्य मरुत या स्तानमा ४१
विना॥ मयिः प्रजाय गि श्रुत्वा गुर्यं नृ मय दृक् कं॥ कलात्मा वत्तु क न नी दवता सावदाः स्मृता॥ द्रुव दी यो कव गः
नः॥ षड्भु प्रजा वेः स्मृता॥ रुक्मः॥ यथावर्था गं गुण मय ह विगं प्र कर्वा क माली टं कं श्रुत्वा क वालं दल म मरुत ल म
द म कुरु व दृक् कं॥ मरुता विद्युत्तया य स्मृति क न वरुया वत्तु यः॥ यं व व कं॥ मरुत वे क्ता क न मी स क ल न गि नि री साव

[illegible]

॥ गवार्कनकिरिबीकः ॥ च ॥ मा निषकल्ययन ॥ ॥ ध्यायेयमकवल्ययकमवानपाभानपयद्वयांकममवाननवः
 पूरककः ॥ मा विरुती मित्रकवेन वृर्णकवाकौ समाहर्नीतिनयनीकनूलेन्द्रवृर्ण ॥ येरुदाववलेः सादमेयवा
 वेः ॥ सुहायया ॥ ॥ प्रपश्या गवश्चामि संविदानन्दसिद्धिर्दिवदादिः ॥ किं वरुपा यवमात्मा महा मनुः ॥ वक्रकाया
 चकशिनाः ॥ पशुमनुः ॥ सुहावराः ॥ गाननकादि का न्यस्य द्रुपा मदिभनिका ॥ माहकायकमा ज्ञेय सुहायः ॥ ५३
 रुविधानविन ॥ मविद्वक्ता समुदिरु सुभागा यगुमीनिनी समस्तवर्णसुभागा यवकमा नुदवेगा ॥ स्वाहायेः ॥ पशुम
 नुरिः ॥ पवीगानिषकल्ययन ॥ गुरुदिकुवृधक्या रूपा रुविहवाकवे ॥ ॥ गानादिपवमनुरिः ॥ एविवीयमानः ॥

मानेवगमामनिर्भरगदकमूली ॥ समित्तामस्तु गमनस्ववमवाककुरुः ॥ पर्वरुगमसा नुसधाम्वानि ॥ पिवरु
 कमया वल्लुवदुमः ॥ पागुदीविनाः ॥ गमा क्कानदिया मानः ॥ पर्वचकनयविदुः ॥ दहापिना दमस्तमि न्यास्यदः
 धौनविलामनः ॥ गल्लानयना नमी रुद्रयायननरुमि ॥ ॥ पर्ववल्लुमयका म क्कलादिवानु रुवत ॥ न्यस्यमकीयथा
 न्यायदरुविश्वस्यमानवी ॥ रुधमकां नरुगदवान् यरुदयिमन न्याधः ॥ दवोश्च रुद्रया दयो मकुविरुनुदनिर्गः ॥
 मृश्वल्लुदुस्ववप्रक न्याधसमिधकिला ॥ सिद्धानपायासा अनि दया न्यस्यविदुवेधाः ॥ मृमीरिरुद्रया मृकनदः
 रुद्रासमाहिरुः ॥ सद्यो नका मानवा प्राप्तिपवासिद्धिरुविन्दति ॥ ॥ रुद्रिकं सरुमा नि कला मकी विमास्ययन ॥
 विपूनकदान् गल्लानरुत्वा गान् कवान् सापानसपन्नगान् ॥ मका मयथा वरुिपतिपरिसमुरुवानाविका

वा ना भयदा सुहा माय समदी वित्तः परि किमधु वापनो रुद्र या लो कमान नशः अविना यव सरु व स्या कारु मि
 पुन नयः ॥ अमी रिः साध का रुत्वा व स्या दी न्य पि साध यत ॥ रुत्वा लो कं निलः ॥ अष्ट म्भु यं सवै यानं कं ॥ पायः
 साने न रुद्र या अमी सवै सम द्यः ॥ वा मा नी ल क लो मन मे रु ती शि य सा प्र या न ॥ यं न रुद्र या लो क या प्र या की
 किम कयी ॥ जा ती क्त्वा स म लो मन सवै ला कं व न न यत ॥ म्भु यं कि मध के लो व (लो लो क मान नशः रुद्र या रु लि ४४
 का रुत्वा व न य दि श्व म अ सा ॥ लि शि ला य रु व (भु य मा रु का ध्वा न प थ क प थ क ॥ अथ य रुद्र या द (गो रु त्वा नाः
 रु व म्भु य व न ॥ अ रि वा व रु वा लो मः सवै व का प सि दि दः ॥ स रु स लो म वि त व द्दि कि णा नि ष्क मान नशः अष्ट म्भु य
 कि ना य था यं थ क रु ल मा प्र या न ॥ न य स क र्त्त क पि व न्या न दि न दि न ॥ स लि ल स रु व द्वा गी ल रु र क वि नीः

४२

ययी ॥ वा की व स व वा क लो य य सा वि प व द्दु र्ग ॥ अथ र्त्त मा रु का रु र्त्त म्भु यं स्व वि धा न नशः पि व न्या नः स म
 धा वी रु व द्वा क रि स नि रु श वा की स रु स र्त्त क्ती व वा सा प य सा पि व न ॥ ल रु न मं गी म्भु य म वि वा ना रु र्त्त
 यः ॥ पूर्वो क्त्वा प क्त्वा क रु र्त्त स र्त्त या पूर्व व न ॥ का थ न पु न य न म्भु य था व र्त्ती व सा वि ना ॥ अष्ट म्भु य वि ला या मिः
 सवै व ल स म वि ना ॥ अ वा क्त्वा रु य द्दी मा रु का म्भु य न ॥ स रु स मा धि र्त्त सा य व रि वि व रि य न वी ॥ स न वा व
 रु रु ल (ग वा क्त्वा न पि रा रु य न ॥ पु न व द्दि कि णा य था रु कि यु क्त्वा म्भु य कि रु श व का क व वि (म भु क रु त्वा द्वा
 य ना कि दी (ग रु य रु न न र्त्त सी सवै सो का ग य सि दि दी ॥ अ रि क मि द्दी पा रु वि श्व स म्भु य प दी पूर्वो क्त्वा म्भु य
 रुत्वा म्भु य न व य मा ल क ॥ म्भु य दि रु प य रु प द्दु क ल सा न व ॥ रु रि व रि ता न रु रु न व रि थ न व रि

तानासधुपवासिनामकीद्वीकृतसमन्विताना। मयूर्युद्धगायेतानवद्वयदमुकेकुताना॥ सकामानि सर्व
 द्योऽगमदानवकविदुमो॥ पृथवागमवकर्तनीलवर्णियथाक्रमान्॥ उक्तानिनववर्तानिनेषकर्मवृत्तिः कि
 पत॥ विष्णुकाकामिन्दुवर्त्तीयवीपूवोऽनिःक्रियेन॥ स्तूपयत्कुरुवर्त्तुका मलोऽन्यतपल्लवानाविन्यसंदकताः
 येनोऽथर्षकाश्चरुलाचिनान्॥ मधुकुम्भसमावाधोदवीमकीद्वेषादिकुशामवेयदिष्कर्मवृत्त्यापिआशाःप्रादि
 ताः॥ वज्रमकुयताः॥ काकालकलाः॥ सर्वसिद्धिदाः॥ नक्तवाद्युत्सृज्यपायसंविदयन॥ समस्तकृतानकु
 मेविद्यारूपस्यायंमर्गमर्ग॥ मूर्तिर्विचित्रिलाभनसाधार्कदलदकिर्ण॥ सर्वपापकृत्यकर्तृशुद्धदंकाकिसिद्धिदं
 ॥ कथाधारादिसमर्गसोराग्यधीकृत्यपदं॥ पूज्यदंवरंक्षानामरिषकमिदंविदुः॥ कवाकंस्थपूवः॥ सिलारूप

या।
 (सायंमर्गमर्ग॥ मूर्तिर्विचित्रिलाभनसाधार्कदलदकिर्ण॥ सर्वपापकृत्यकर्तृशुद्धदंकाकिसिद्धिदं॥ रूपसायंसः
 रुद्रकं॥ कवाकंस्थपूवः॥ कुरुदुरुतगलामपि॥ पवनकुरुसिर्षदिव्याशुर्गं॥ पूज्यधामयं॥ विधुविद्यारूपेन्यागा
 विषवागविनामकन॥ वलीपवितवागशुः॥ कृतियाभापुलाभनः॥ पूरिदः॥ सर्वसोराग्ययायीलक्ष्मीकृत्यपदं॥
 सामस्योत्रिपुपाः॥ सुवर्णलाहुर्यंनथा॥ नोपमिन्दुः॥ समताहमसुर्योकासंक्रताममः॥ लाहुरागाः॥ समुद्रिदः॥
 स्वभायकवर्षेखाया॥ नलोहः॥ कावयन्मूर्त्तं॥ मसंकलितमंगता॥ सायंसहस्रंमंजुपा॥ समस्तार्कदलदकिर्ण॥
 सायंसपातयन्मकीसविषापूर्वसेखाया॥ निःक्रियकर्मतामूदा॥ मरिषकोकवत्सना॥ मवाद्रूपकृत्यदवीम
 पवावः॥ समाहितः॥ मूर्तिर्विचित्रिलाभनसाधार्कदलदकिर्ण॥ पूज्यधामयं॥ कुरुदुरुतगलामपि॥ पवनकुरुसिर्षदिव्याशुर्गं॥ पूज्यधामयं॥ विधुविद्यारूपेन्यागा

यथा॥ हादिष्वर्जक्योत्पत्तिरिति॥ अथ लिपित्वा मूलं यदीकनमयपिकरु॥ वदन्ति सुविधानि स्थित
 केवलं मयि धुरी॥ यत्र समिन्नादावीर्जविन्दुनायमहाजिह्वा॥ पथिव्यकनकास्वकिः॥ सद्योऽसुविद्यमानि॥ सलि
 लाकनपथेः॥ स्वेः॥ सद्योऽपि नृगगनयि॥ वदन्ति वदन्ति कलदीपं नलं विवस्वतः॥ मन्त्रद्वयं लसत्पुष्पं ध्यायन् नव
 पृथिवीं॥ अकाशाद्गुरुलं नमो मन्त्रेण॥ यथा मन्त्रास्वमधुकिः॥ सितं यत्र मन्त्रवीं॥ वदन्ति गमादिः ४०
 किः॥ कृष्णसमूहं नमो नारुव॥ निवसन्ति मयि साक्षाद्गुणानि नृगगनयि॥ एनमात्रिण्यसुविद्यः॥ सद्यो नकामा
 नवाभूयुः॥ स्वर्गो नृकमन्त्राकाटिप्रदानीमापीनभुङ्क्तेनी॥ वदन्ति वदन्ति मन्त्रका मधुमदायालालननृग
 यी॥ विद्यानामनिर्गवर्जं पवतीमिदं कपालं कनकाद्योपावनगन्धिना लिपितं नृवागीश्वरीमाधयन्॥ अः

[illegible]

काशारिनीविनादिनीयामाहलिःपाकाहनीयाद्याहमकिरिःवदुथीपवमीपाकाद्यातिभक्तिकिरिःपुनःशव
 दुःपद्यासुनायलीभक्तिरिःलोकायकैःसफमीपुनवर्तषामसुसायदहमाहकिःपर्वपुसाजगद्वागीशी
 रुतलिपियवता। सुनेषुकैषुविधिवदयथाशानिपूर्ववत्। सुमिकावागुवीदुग्गोश्रीभक्तीः। कलकली
 शवःसाःपुर्ववत्पुसाः। कवालीविकवान्मा। सुवस्वगीशीदुग्गोश्रीषालक्ष्मीश्रीसुमिहकिः। यद्योमया ४८
 मठिकाकिनाशायाउममकयशखड्गखटकधविद्याः। यामाःपुसाः। स्वर्लकनाः। विद्याकीपुष्टयःपुष्टमि
 नीवालीकुदुःकनः। बुद्धीयापुनानन्यास्याप्रापधदिदासुमा। कालनातिमेरावाति। कुदकालीकपोदि
 नी। विहकिः। नृस्वाम्यासुन्दरवृष्टानिखड्गिनी। निशुम्भुम्भमथनी। मदिषामनमदिनी। ऐन्द्राणीवव

बुद्धाणीर्गकवाहमनीविही॥ नावीनावायलीवेव। लिशूलिन्यापिपालिनी। सुमिकाकादिनीवेव। दानिभ
 वुकुयः। निगाः। वक्ररुकाः। पिशावास्याः। संपुष्टाश्चाबुरुषणाः। पिङ्गलाकीविष्णुलाकी। समद्विवृद्धिववव॥
 यद्योस्वाहास्वधारित्यामायासंज्ञवसुधेना। तिलाकधातिमाविगी। गायत्री। त्रिदलश्री। सत्रूपावक्रुत्रूपाः
 वक्रन्दमातायुगपिया। विमलावापवापश्चादवलीपुनवात्रुणी। प्रकतिविक्रिः। सदिः। मुक्तिः। स्रुतिः।
 वदा। संध्यामातासुतीहसा। मदिकावजिकायना। देवमातारुगवती। देवकीकमलासना। तिमुरवीसफसुखान्ना
 सुनासुवविमदिनी। लम्बाहीवाहकनीववक्रुमीषावृकायनी। वंथनस्वाक्यापश्चादुनिवस्वातथापेना। ग
 गनवंगयवनग। विधावगदनकनी। तगाकुवनपालाख्या। त्रुः। स्यान्ननयनापुवा। मूर्तगानगमयना। तथेः

वार्त्तगभरवला। मूर्त्तगभरुमाविश्वरूपासुनरुयंकनी। मन्त्राश्च मन्त्रावादिभ्यो वज्ररूपाभुविबता। वज्र
 याश्चाथवागीभी वज्रः ४ ॥ ४ ॥ समीविता॥ वायवावधवाः ४ ॥ सर्वो ज्ञा लाजिहाम हापराः ४ ॥ दक्षिणः ४ ॥ दक्षिणः
 मन्त्रा यक्षा यक्षा कमानसाः ४ ॥ सर्वारुवगसदी काः ४ ॥ पूजनीयाः ४ ॥ ययलनः ४ ॥ लाकः ४ ॥ पूर्ववत्पुत्रा सुद्वयः
 जादिका न्यादि। ४ ॥ यः ४ ॥ पूजयन्मनी श्रीरुतलिपि देवती। श्रीवाः ४ ॥ ४ ॥ सरुवः ४ ॥ मिध्वैवपातिनन्योर्गः। कः ४ ॥
 मलेनयूर्तद्वत्वा मजानेवमवानयनं॥ उत्पले कूटयालद्व मलालकः ४ ॥ पूजायनं॥ यला मकुसुमं द्रुत्वा
 वत्सवगकवि देवता॥ वागीलवगहोमल वनिर्गवममानयनं। मारुका कानिकमोनि कृपायतापिसा
 धकः ४ ॥ रुतलिपीयुटी कृत्वा श्रीमरुत रुतनेन वः। कुमाकुमावृता वत्वा रुतसिद्धा रुतमनूः ४ ॥ यस्तुपुत्रजग

कारी कृष्णली मध्यावलोना॥ मंगमयापवस्तुन पावविर्लापवामनेः ४ ॥ प्रावयन्मृद्धिमूलार्कथा गायीसः
 वसिष्ठियः ४ ॥ मूनयान्य सुदेरु मूनैरुसा रास्तु वरु। यनुकियाविः ४ ॥ प्रीति स्तुला कर्मा नि साधयत विन्दा
 श्रीगगनं नंदव नित्रय कस्तानी वरुथा युगी। नत्यना मने नवमध्याविदिताः ४ ॥ साधो मयवधुद्वयः ४ ॥ यनुष्वक्रेवसा
 रुकात्रपुटितां कुरुतव क्षीलिखे विष्टवा न्यदले विलिखामतिमानवले नसीवष्टयत॥ विष्टयनुमिदलाः
 कुरुवन्दनं नविनिमित्तं। वादिष्ठा मययवाला विष्टयं सवे मनिदी॥ योद्यो साधुधन्यस्व सुमियसो म्यानी कुमा
 नुदेयूर्त कायर्न नमसा चिर्न विवययन्मध्यादले वष्टयवा ययान् ययपुन विलिखे विष्टना निष्टे मूनै
 दले यनु वायुग रुत वष्टि नमिदस्या लालयतु स्तिर्न॥ स्वात्ता मन्त्रा देय यर्न वायवी लिखे नन्दियाः ४ ॥ द्वाष्टी

दन कलस्य मुक्ति वोरु वति धुव ॥ बक्रु वीरु यगं कमा कुव व मशार्द्धे न्यु क स्यात्त खो वा रुड्म नू प्रषम ध
 विरुतः पुरेष्ठ वक्रु वाना ॥ वक्रु नू वक्रु निवा धिना पविलिखे सा कवे धोष के न ह्यं वां य दल कमानुपः
 प्रगं रुथो दल कलिये ॥ मुक्रु वा वक्रु स्या (ग ला कर्क क म कलिये ॥ वक्रु कल स वक्रु ना ना य नू मा ग्नय
 मी विनी या टका क व मिश क कलिका या क मा दे य ॥ विनी मा व ल त द्रु क लिखे न ना म य धि प ॥ ना सा र्द्धे ५०
 नू म द मू त न म नू य गं सा र्द्धे नू द न ना विधु विधा के तु रु व न मा नि ग धि ना म धो म नू द वा व ल त व द्रु नू य नू प
 रुष वा क व य नू नू ध स व ध क र ना लिखा या पु न ल व धि त मि द य नू रु व द्रा व ल ॥ स य पे नू लिखे द न द
 क व न न वा नि ना ॥ वा नू ल का दि त का य य नू व म्या दि क रु व नू ॥ ग (छा वि नू विरु विना व मू म नी स्या ला द

श्री गुरु या म धो स्त्री तु ज (गो लू क न नि वि मं म क लिखे म धा न ॥ ना का ला लू प टी क ना नू व स म नी व लू
 नू द ल ला लिखे त म वा व लू य ना नू य था वि धि रु वा (ग रु न म म्ब छ य ता ॥ अ छा या मू दि न मी म्ब मू दि (ग वि
 के नि मि नी या धि वे य नू म वि वा स व र क रु क रु व नू ॥ मु क्रा रु क रु नो नि र्म श्री रु त लि पि द व नी ॥ य ५ स व
 न रु रु ४ पू रे द न धा नो ४ स पू यो न ॥ ॥ मू ति व व ल मी व द्रा द वा या दि नि ० द यो ॥ वा गी म्ब या द म (धो य म ना
 वा गि रु व य दे ॥ म पि ४ क (छ वि ना द रु न्द्रा द व ना वा क म मी वि ना ॥ मि व ४ म व ल द म्ब म्ब व द न धू गु द कि मी ॥
 न्द्रा म्ब म्ब नू या व द म नि मा रु का का नि क ल य य नू ॥ न व ल स क ल मि नो वि रु नी मू रु का नि ४ क व रु व ल मि ना मी
 स नि ष म्ब सि ना रु ॥ नि रु क न क म ला य लो नी पू रु क ली ४ स क ल वि रु व सि धी पा रु वा द व ना व ॥ द म ल रु रुः

येनानु दना श्रीकृष्णारुणः प्रभुवीकेऽपयात्यकेऽस्मिन्नेवमधुनायुनेऽमाह कापी विरुयी ॥ वागीमी सवेय
 सुधीऽवधुऽकेनामनयथा नृत्तिमूलनकल्ययन ॥ आयावमानिर्मेययथावुकीविमायऊन ॥ यागा सखा
 वविमला लानावुद्धिऽस्मिन्ऽपुनऽमधायहावयनवमुदायुक्तकधाविणी ॥ यला ॥ यषसमस्यो वद्धाः
 ॥ आयायथाविधि ॥ लाकपालावलिऽपुष्टा सुषामकानिगद्धिऽपर्वमपुष्टयनकी ऊपहासादिनस्यवऽव ॥ ५१
 क्ववयावतऽमुद्धऽमुद्धयननखादिकऽसंसावनसवेवनिताऽसगर्तयवगाधियो ॥ कवित्वलरुर्तमीः
 मानुसासेद्योदनासिद्धिऽपीत्वाकनानिर्गताय सहेमपयलरुपेन ॥ महाकविर्देवमकी वसुदेवनम
 शयऽउवासागादकस्मिता धायमारुलुमलुला ॥ मिर्तायवीपिनिदिने निसहस्रजपमनी ॥ लरुगेमधुला

सिद्धिवावामयतिर्माकवि ॥ यला मविल्लकसुमेरुद्रयामधुनाकिनेऽसमिद्धिर्वागदुक्ताहियो ॥ ५२ प्रातिवाय
 र ॥ हामायसवेसोराय लक्ष्मीवन्धयधारवत ॥ वाजयकसमरुर्तऽपसूनमधुनायुनेऽनसमिद्धिश्चरु
 द्रया कवित्वमधुलरुवत ॥ ५३ लक्ष्मीकनीपाका सिद्धयवावमिदुर्ता ॥ ॥ हृदयानेर्गवतिवदमदयुर्ग
 नरुऽवाग्दवीवक्रिजायोर्न वागुवायसमरुवत ॥ मनुषाठमवधुर्वागेश्वरुलपदे ॥ मनाऽपेक्षि
 ॥ ५४ ॥ कृष्णोत्तमजातिर्मेयुनेऽपुनऽसवेविलेयमाल्यवसनीमीर्तामुख ॥ ५५ लक्ष्मीवाग्दामकगुर्ग
 धायकलर्गविद्याश्चरुताम्वरुऽविद्यार्गकमसुनीकुवननीवाग्दवर्गसुमिर्तावन्दवाग्दिरुवपयकिन
 यनीसोरायसम्यक्नी ॥ रुविष्वामीरुपसम्यक् रवसूलकमनन्यधीऽदम्माईरुद्रयादकनिलेवायप

विपुलेऽमरुका कयऊली (०) दवीयागी विरु कमातु ॥ पिवरु भक्ति रीतार्थ पातः कालदिनदिन ॥ विद्वान्व
सवताम नीरुवना सि विवा वना ॥ मृष्टि विव रु ल रू फे ॥ मृत्मान म्मान कर्मणि ॥ गप्ये य र्का रु ले ॥ मिष्टे वः
निमेषा मवा प्रयातु ॥ पुष्प गंधादिकं सर्वं रु रू फे धा वये सधी ॥ सरुयां पुष्प न स रु द्वा दय विरुयी रु वना ॥ ॥
नानमाया धवा विन्दु ॥ मकि सा र्ग सव सवनी ॥ रु कान नयनिका मनु ॥ धा क ७ का द म्मा क व १ व द्वा व (धु रु वी म्मा १२
(धु नव व (धु वृ व क मातु ॥ मनु व धु न नय स मनी वा रु व नी ग क ल्य ना ॥ वा धीं पु र्वा नि म्मा क वा रु ले मृ द्वा क
योन क न्य पु र्वा व न्धा र्वा कि न म रु का नि रु क व १ स वि रु ती मा द वातु ॥ वी णा म रु गु ण सू धा र्वा क ल स वि र्वाः
व रु र्ग रु नी दि वी वा रु व (धु वि रु पि न न रू रु सा दि नू रु रु ॥ रु य द्वा द म ल का नि रु रु म रु म सि नी व रु १

नागवन्धकपृष्ठीवो रुद्रयासाधकारुमशमातृकाकञ्जयन्त्री १० वक्रमाजकुमभगता वक्षुर्वैनासनेक
या मुक्तिमूलनकल्पयन् दद्यादकिंनरं ४ पूया संस्कृतावाक्षुस्वीमुखा प्रकृतावामन ४ पूया वाक्षुयीसुवे
सिद्धिना ॥ १० ॥ पूर्ववदज्ञानिषस्तथाप्ययज्युन ४ प्रह्वमध्या ४ नि ४ म कि ४ स्म ति वा गी श्वनी म कि ४ स्वस्ति यानि
समाख्यातावाक्षुयास्तदनकर्वी ॥ लाकमानवेयद्रूपस्तदक्रानिवनद्वदि ॥ १० ॥ किंसीयुज्यनदवीं साक्षाद्वा
ग्वत्तशरुवेत ॥ दक्षाकवीसमक्रानिकर्माध्यापिमाधयेत ॥ वावस्यन्तुमनरुय ४ प्रवे ४ प्रविनिकीकयेता ॥
वाग्मशोमनिरि ४ याका नूदसंख्याकथामनू ४ कृया दज्ञानिविधिवद्वागर्थ ४ र्वचरि ४ पद ४ ॥ श्रीमीनाकमलेकने
रूपटवीपद्मद्वयं पूरु कं विशालातनू १० नू वद्धमूकं ठामूकं नू कन्दयुक्ता ॥ रालामीलितलावनाकवरुयका

[illegible][illegible]

किं शाकानामिहैश्वर्यं कस्य मेषु ज्ञानं सखं विद्विषी ॥ दूष्योवा नां कर्तृपूष्यं वा रुक्मसमूहं ॥ उत्पलानि यमका
नि सिन्दूना वा कृत्वा निवाराजुनसयस्वगी निर्यमगानि यविवर्ज्यं यमगा ॥ मूसार्गं गृहं न विस्तृ कर्तृलवर्णं कथा ॥
नलीपला पुष्टिष्वर्कं ॥ अष्टमपिरुजुन ॥ सर्वेषां पितामहा ॥ सद्यो सावस्वगाथिना ॥ नवने निनिगी वृत्ति ॥ क्रियं
गद्वुदिवानवानमं ध्या ॥ भवपेक्षा रुना ॥ मुविः किश्चिद्वचनं ॥ पदापेक्षरुजुनी न दिग्ब्रह्मनि विला कथं नानः ॥ ५४
प्राप्तिगी क्रियं गद्वुन्ननिन्द्यामलायना ॥ नमषावचनं वृथा ॥ नोक्ता मस्युक्तं कस्य ॥ अष्टमपिरुजुना ॥ निर्यमगा निनापः
कं ननलं च यं ॥ यदुदं ॥ अष्टमी पदे ॥ यकिपदुदं ॥ गष्वे ॥ संप्रकमपूवसर्वेषु विशाने वप ॥ ० दूध ॥ व्याख्या नमं
त्यजनिद्रामालेयं रुक्मं नपन ॥ काधनिष्ठीवनकदन्ती वा ॥ अष्टमपिरुजुना ॥ ननलं च यं ॥ यदुदं ॥ अष्टमी पदे ॥ यकिपदुदं ॥ गष्वे ॥ संप्रकमपूवसर्वेषु विशाने वप ॥ ० दूध ॥ व्याख्या नमं

जिगतिविपुत्रमव॥ आश्रित्यवाग्भवमवांश्चतुरेमदादीनभावान्पुदेषुविहितान्समुदीरयन्ती। कंठदिभिश्चकरणैः परदेवतासांसन्निभ्यीं हृदि कदापि न
विस्मयामि॥ नृकृश्यावायवजिह्वयवविषदुमालीकनिष्ठलधियानिजनासिकागं। ध्यायन्निमूढि
कलितन्दुकसावतर्ह्यगदपमम्वक्तुनिनस्रनूल्मर्कमिर्गु॥ त्वपायममथविधावपूज्यद्वारगं हृदिकथो
षिजगतामिति वदवोद॥ सत्यगदयितनथजगदकमातर्नीचद। णषजगत॥ ह्मिनिश्चवनस्यात्॥ पूजां
विधायकुसुमैः॥ सूत्रपादपानां। पी। ॥ रुवास्वकनकावत्तगद्वधषू। गभयन्निमिद्धितनिता॥ मरुकिन्नरी
हिनाद्यादितासवन्सामूलनपुष्या॥ चिदुद्दितासवधष॥ श्रियमूद्वरुकीयाकीसुवासरुवनाच्चिवना
ऊधानी। शोषम्वत्समेकमलानिविकानयनी। ययजिह्वदधिपनामृतसिकगंर्गु॥ नूनन्यऊमरुवर्नरुव
नंशुतिनार्थेनयमाहुतनूमम्वतवागुयामि। वक्ष्येविष्मृतिरूपासितपादपद्मां प्रोहायऊमवमर्तिरुष्ययथा

वत् ॥ गद्यार्थरुविदुवर्नरुकीन्दूपा यागद्विरुलिपुनवर्कनरु ४ सुग ॥ वक्रासिका रुवतिरुसकलीय
 गभन ॥ गभनयदीमनमिऊरुनविस्मयामि ॥ नात्रायलीतिनवकारुवताविनीति ॥ जोनीतिश्वदगमनीतिस्र
 सुतीति ॥ हानपुथतिनयनययह ॥ विभक्ति ॥ तामदिनाऊतनयवदूधारुजुकि ॥ यमुवनिऊगमात ४ ॥ शुकीद्याद
 गरिकुमा ॥ ताममवपायवाकसिद्धि ॥ पापयुक्तधर्माश्रिय ४ ॥ ॥ वाक्यायाकमलाकात्रनभानरुगवयथ
 ॥ श्रीमान्नीश्वरिवद ॥ सर्वजनमनारुवि ॥ सदादिमखवाकन ॥ सदादिमखवर्नरु ॥ सदादिमखवर्नरु ॥ सदादिमखवर्नरु ॥
 विसुर्वपयवयन ॥ सुपुत्रपवर्गवका ॥ नरुमग्यायनरुत ४ ॥ सर्वदूष्टरुगतर्गकविमखरुगुमुय ॥ नरुविस्था
 सर्वलाक ॥ मरुकीनिवयुगवि ४ ॥ वगमानयजाया ॥ नरुवदूगीयकथामन ४ ॥ न्यासानरुनरुनीक्या ॥ दूकमा ४

२४

नयथकर्म ॥ मित्राललाटरुमा ॥ गलक ४ गलावसि ॥ नलाहर्गुऊदन्द ॥ ऊ ० वनारिम ४ ॥ स्वाधिसु
 नरुऊद ॥ पादयार्द ॥ द्विनीनयथा ४ ॥ मूलाध ॥ नरुयनय ॥ तयदा ॥ नरुयद ॥ नरुयद ॥ नरुयद ॥ नरुयद ॥ नरुयद ॥
 वेसुषट्पवर्ताह ॥ रि ४ ॥ दगर्प ॥ नरुयदागि ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥
 नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥
 वदन ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥
 वरुवीऊ ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥ नरुययम ॥
 रि ४ ॥ निव ॥ निव ॥ निव ॥ निव ॥ निव ॥ निव ॥ निव ॥ निव ॥

[illegible][illegible]

विष्णुः नृणां विष्णुः किमयथा ॥ गगनं च नवानद्यां नन्दवृद्धि मिमांसा ॥ कमान् ॥ निशो ह्यलक्ष्म्या धनं धृतावीर्ययादि
 काशमानं ॥ नाष्टपुविन्यासः यथावदङ्गिका रुमशमानं श्रीमदुदाद्यां गीमहालक्ष्मीपदादिकां ॥ सिद्धलक्ष्मीपदाद्या
 नां मूलमाधनमलुल ॥ न्यस्य भवेव कूर्चगयापकं दङ्गिका रुमश ॥ एव न्यस्य गीतामी विनयमगुधवर्गा ॥ ध्याथय
 वत्तपी ॥ १० ॥ ककलपठिर्गि ॥ नृणां ग्यामगती नृणां कां द्यिस्त्रां गनिगकलधर्मा वल्लुकी म्वादयर्गी ॥ कङ्कनावदम
 लानियमितविलसकृलिकानिकवर्कुमान् ॥ गीस्थपगमधूमदविवर्णा विगुका गुरुसिराली ॥ नृयर्गपुञ्जधनर्कुः
 गद्वर्गां गीमधूकङ्क ॥ पूष्ठादिमधूभापने ॥ रुद्रयामनुसिद्धय ॥ त्रिकाणकवर्कुकीपदं मधूपर्गपुञ्जलायन ॥ नृष्टयः
 गुरुर्गवाक्कृदृषी ॥ गहिदले ॥ वहुनयसमायर्क ॥ काह्यादद्विसभाहर्नी ॥ नृसिन्पूञ्जयती ॥ १० ॥ नवगकिं ॥ कमा

दिमा ॥ विष्णुमित्रनिः ॥ कानि ॥ रुद्रिः ॥ कार्त्तिकसन्नि ॥ यश्चिन्तुश्चिन्तित्वा ॥ मन्त्राङ्गीपुदपञ्चिमा ॥ १॥ सर्वानङ्गकि
 कमला मनायनम ॥ ल्यथ ॥ वाकं कृकिलक्ष्मीवीजाद्याः ॥ मन्त्रासनसंरुक् ॥ १॥ मूलनमूर्तिर्लोकल गत्यावामाक्यवः
 नां ॥ नृष्टयद्विद्विनाननवक्रमानेवमनुविग ॥ नृष्टाद्यां किष्का ॥ लष ॥ पूञ्जयत्पूर्ववत्सूधी ॥ दलेखाद्या ॥ १॥ पूञ्जयत्
 मध्यदिक्कवमनुविग ॥ पाङ्गार्कगहयर्हीष्ट ॥ धानि ॥ ल्याहूगसपुहा ॥ नृज्ञानिपूञ्जयत्सूधा ॥ अथापूर्वविधानवित ॥
 वागाननृष्टयद्विद्वि पवर्मपूनायजत ॥ दलम ॥ धाप्सपूञ्ज ॥ नृनङ्गकुसुमादय ॥ १॥ पाङ्गार्कगहयर्हीष्ट ॥ धानि
 ॥ नृविनेगहा ॥ पाङ्गार्कगहयर्हीष्ट ॥ पूञ्जयत्पूर्ववत्सूधी ॥ दलेखाद्या ॥ १॥ पूञ्जयत्पूर्ववत्सूधी ॥ दलेखाद्या ॥ १॥ पूञ्जयत्
 नाङ्गनिषङ्गाद्या ॥ पूष्ठादिमधूभापने ॥ रुद्रयामनुसिद्धय ॥ त्रिकाणकवर्कुकीपदं मधूपर्गपुञ्जलायन ॥ नृष्टयः

[illegible]

यतिर्द्वयं॥दूर्वाहिनायाप्राणि कदम्बैर्वक्ष्यमापूयात्।अत्रवाननरुहामन गच्छतेर्धनवानरुवत्॥सर्वं तु सधनाप
नं हामद्वयमदाहर्ण।नद्यावत्तुल्यं॥पूष्ये हामावाकसिद्धिदायक॥निम्बपुष्पैरुक्त्या दीप्यन्तं पितृमन्त्रं॥प
लाङ्कसमैर्होमा भजस्त्रीजायमानत्र॥वन्दनागुन्कैर्पूजनावनाककुमादिहि॥वन्द्याय रुद्रायाम्बु वन्द्यदखि
लेजगत्।एतानि कृत्वा तिलककूर्यान्ना कृत्वा रुद्रवत्॥निर्गुह्यं मूलहामन निगतामृतमनत्र॥निम्बमैलात्रिभैर्वाह
होम॥गुर्विनाशन॥हविदा बृहस्पतिमिहो नृवने॥सुमृत्यत्यनान।वसवहि॥रुले॥पक्षे॥पूष्ये॥पविमन्त्रान्त्रिभै
॥कृत्वा सम्यगवाप्राणि साधक॥सर्वमीषितं धवन्तीजगतामार्था मातृमीमिक्षदायिनी॥नृवापुर्मिद्वन्तावावां हृषथद
त्तमानया॥अत्राध्यासागव्यवनाम्बुजं वृक्षादथा विष्णुर्गङ्गां लिप्ताय॥नृम्यपर्ववाग्विरुर्वमूनीत्या॥पर्वणिर्गङ्गा रुकिः

रुद्रहावाच ॥ १ ॥ नमामिधर्मीनववन्द्यभोले मोगिनिनी वन्द्यकलावर्गसी। आमायवा गिः ॥ पकिपादिगार्थपुवाधयनि
 शुक्रमादयन ॥ २ ॥ विनमुदवासूत्रभोलिवसे नीवाजितगवत्रनववन्द्य। रुद्रकिथयविमहीपतीना वुक्रनिगसुस
 यमादयन ॥ ३ ॥ मागिनिनीनागमनहवत्या ॥ निज्जनमअरी नमिषाहुकने ॥ मागह्वदीयवत्रनवविन्द माहुकि
 मागववसीनिउरु ॥ ४ ॥ यदाह्यदीनिजिनिनूप्राह्या रुगार्थयनीपदवीपदाह्या। नृसूत्रनीकलवल्काना
 मागिनिनीमदुदयधिनामि ॥ ५ ॥ नीलीशुकावदनिगवविम्वी गालीदलनापितकुरुहृषी। माधीमदाद्युत्रिगभग
 पद्मा यनसुनीगमुवधूनमामि ॥ ६ ॥ गतिमृगाकर्तुमलवृहृषी विम्वलर्कनवलोमवाच्य। सत्रामिरुक्ताजगता
 मधी ॥ ७ ॥ वलिगुयाकननसयविम्वी ॥ ८ ॥ नीलोत्पलानीमियमावहनी काह्या कटा ॥ ९ ॥ कमलाकनानी। कदम्ब

१०६

मालाक्षितकनपाणी मागिक अदिदिहावयामि ॥ ९ ॥ ध्याययमात्रकाकपालकान् विम्वधवत्रयमुलनामवर्ग्य। नृः
 लाललीलालकमायगाक मन्दसिनीवदनीमहृषी ॥ १० ॥ सुहानपागकवधर्मपत्नी मागिनिनीवागधिधवर्गनी। युव
 निथरुकियतामनृष्या ॥ पत्रागिर्यनित्यमपागयनि ॥ ११ ॥ गिणीसात्रदानिव कंददादणपटल ॥ ॥ ॥
 ॥ नृधवश्रगणपत मन्तान् सवार्थसिद्धिदान ॥ यान्तद्वामानवानिह्य साधयनिमनावधान ॥ पत्रानकवीगनिधव
 वीर्जगणपतवैद ॥ गणक ॥ स्यान्निष्कृष्टो निरुद्धिथास्यववता ॥ पद्मीयराजावीऊने कुर्यादङ्गक्रियामना
 ॥ सिद्धवार्हनिनर्गपृथगज ० वरुसपथीदधानं दनपाग ॥ १२ ॥ निवृकवविम्वदीजपूनाम ॥ बालनृथानिः
 भीर्तिकविपतिवदनदानप्रादुर्ग ॥ शमीत्यावदहृषी रुद्रजागणपतिवकवकु ॥ १३ ॥ धववर्कजपमनु

दशांशं रुद्रया रुद्राभादके ४ पृथक् साजं ४ सकुलि ४ कृपर्वरि ४ नालिकने फिले ४ गुदे ४ सपके ४ कदली रुले
 ४ नरुद्रयानि विद्युत् कथितानि मनीषिहि ४ नीलादिना किहिर्मक पीठविद्युत् चर्ययं ४ नीलाख्या कलिः
 नीनद्या हागदा कामरूपिनी ४ गगनावनी सखा नवमी विद्युना सिनी ॥ सर्वादिना कि कामला सनाय दयया
 वधि ४ पीठमर्कय मर्कन पुदया दागनी विहा ४ मूलनमूर्ति स कल्या न्या विद्युत् चर्ययं ४ कर्तु कार्या वरुः
 द्विष्ट पुथमी पूजयदिम ॥ गणधिर्गगलानं रुनीय गलनायक ॥ गलकीर्तनी गगन वक नीलवृक्षमा ४ सं
 दाना गगलरूपोद्यान् रुद्रलक्षण पूजनान् ॥ यथा पूर्वगता स्युः कर्णवच्च सधवता ४ गगमध्यस्थ विधिवत् द
 कुरु भुदिकानयं ॥ वक्रुष्टुभकदंष्ट्रं महायवगजानभो ॥ लम्बायलाखी विकट विद्युना जमनकर्क ॥ धू

१०२

३

नृहासु वं गुद्रयक ॥ सूर्य वनलया न्यस्य द्रुष्टे ४ सयादिपञ्चरि ४ प्रधानमूर्तिपतिमा ४ सर्वोरुनगरुषिताः
 ४ मूलायक ० दयय कृदिना हि क्षणीयेषु मन्त्रावर्ण्य सधवत् पुथर्क पुनवादि कान् ॥ एवं च मन्त्रावासी
 विनयक जसीनिधि ॥ वक्रादयु मारुय दानरुर्क कयूरहा ना सधकुरुलाद्या ॥ माविद्युमोर्ति दिननाथमीरुव
 धूककार्क विलसनिभ ॥ वसुलर्क जपमर्क समिहि ४ की वरुवर्हा ॥ नसरुपुशुद्रया र्कनाकारुर्कि गद्यय
 ४ पीठस्य किफ ४ पुथर्मदीक्षु मध्यवसथं ४ परुर्ग विमल सार्व समात्रा ४ मन्त्रकर्क ॥ पत्रमादिमूर्खपीठं स्वविम्वार्क
 एकल्ययत् ॥ दीफा मूलायकया रुद्रा विरुति विमलापून ४ नृथाना विद्युता सर्व भामरुवीपीठं कय ४ दीफदीपः
 निखाकावा वीज्या समधवत् ॥ नृक्वि वगितयान् दीद्य स्वान् विद्युनि सयगान् ॥ वदत्यदयुर्थं नृ वक्रा

विष्णुजिवात्सर्क ॥ श्री गायथागपी ॥ अथ नमः १ पदमं नमः ॥ श्री ० मन्त्राय माख्याया विनहास्यजगत्पद ॥ गानादिनीस्व
थात्काय मननामूर्ति कल्याणा साक्षिणी सर्वलाकारा गत्या मावास्तूपूजयन् ॥ नमः निपूजयन् ॥ दिव्यगुणैर्कर्मरूप
॥ नमः दिव्याद्याव्यगथाद्या ॥ नमः कथय ॥ कोलयन् ॥ ॥ हस्तनामादिवर्णास्यै फासां वीजान्यनूकमात् ॥ उषापह्नुपहास
स्था ॥ नमः कथयपनि कीर्तिता ॥ पण्डितैर्वाक्कथा ॥ प्रवर्णनमसर्वथ ॥ वन्द्यादिपूजयन् ॥ इहानक्षेत्रमावहि ॥
॥ नीलादयस्तदमुनि यथापूर्वमसञ्चयन् ॥ ॥ १ ॥ पूर्वपूजविधिवद्वाक्कथयन् ॥ यथावत्पुतिदिनं वापि वा
तस्यवादिन ॥ पुरुषममुलीकृत्वा पूर्ववत्पूजयन् ॥ पण्डितासमर्थपुष्कभायगुणदिमनाह्वय ॥ निष्कायन्तमनूना
पूजयन्तु शायक ॥ कंकुमलीयनात्राजि ॥ वन्द्येनयैववान् ॥ कवचीवैजपाभाति ॥ कृण्व्यामाकनगुलाना ॥

कालगतिं विहाय भोपाय तु ४ कन्दक गामि वन्द ॥ मया नृसत्यश्च मूर्खे वज्रय मध्यापयनी स कला गमथान् । द
वानृषी नृक ऊनेक मिर्गं रुद्रममका वलमाश्रयामि । पदाम्बुजास्याम किद्यामना ह्यी कृतार्थयनी च दृयो ४
विर्गा ॥ नृकावर्णकावर्णमाफवायी गनागव कुनज रुमि वत ४ । यनापिर्ग सत्यवती सृगाय पूनालमालिखा
पूनालकाद्या ॥ नृवन्द्यभील सुनयन गप्रा लि नृवायमान न्यद्यन रुजामि ॥ पदंशूनीनामपदंशूनीनां लीलावताः
नृपवर्णसमूह ४ ॥ नागसत्कोवापूनेषात्सकोवत्यरुधमाश्रु रुकविद्युवार्ज ॥ पागाश्रु (गो) रुगनवदा दमिष्ट क
नृदधनैकान नृवन्द्यार्क ४ मृका रुला ४ ४ पृथ्वीकवाद्यै शिवनमस्तेति वथा रुजामि ॥ नृनकभर्कागुभकव
नृ (धे) गन्यार्पकगदादिवीर्य । वृक्ष गिर्यवृक्ष विद्यावदनिर्गर्ग उसूर्ननवर्ण रुजामि ॥ नृनृक्षिगाया निरु

वल्लहाया मुखाम्बुजालोकनलालभर्गु ॥ श्रीमाननाहुं मदवेरुवन नृद्धरुवविश्वविभाहनक ॥ थपूर्वमात्राधग
 जाननत्वां सच्चानिनामुविपथनिभर्षाह्वानवान्यत्युतिपाद्यमर्गे फयसिधत्सर्वमस्यकली ॥ दिव्यवर्ण
 उगदीतितावी कविपूनावीनविमलुलस्य ॥ गजाननयिपुविगकिपुनकलालयोमिफुमरूपपथ ॥ थयानः
 गीतपूवर्षिभरुते सात्मानमानन्दयनददिस्य ॥ गजाननयमहसाजनानी विद्याश्चकात्राविलयपुयानि ॥ ग १०८
 धः समाशास्त्रजगकलापगगनरुखलुनिजपुष्पवनास्वयनरुगपुविहाकभाग्धादाकवृकामः श्रियमा
 तनाति ॥ विद्याकुलानीविनिपातनार्थयत्राविकलेऽकदलीरुलाधैः ॥ पुनात्रयनामदवात्रनास्यपोपूत्रवाहीसु
 मरुहभर्गु ॥ यज्ञेनकर्वदुहिसपाहिनावाधमाद्यगजवाकवर्क ॥ शुभानयाथविधिनायुवनिभसर्वल

श्रीनिधयारुवनि ॥ ॥ निशीसात्रदातिवकगथादणपठल ॥ ॥ ॥ नृथयभवन्दमसा मनुः सर्व
 समुद्धीयः स्वकीगह्वरुवर्दिन्दुमनस्ववसमवित्तः ॥ सामायदययाकार्यमनुष्ठाकः पठाकः ॥ मविनूः
 कोगुरुकुन्धाः पीकेऽसामास्ययवगादीद्यरुजस्ववीजनमनावदक्रियामगा ॥ कपूत्ररुटिकात्रदान
 मनिर्णीपूवर्णुन्दुविम्बाननमूकायामविह्वषभनवपूषानिर्मूलयनीरुमः ॥ हसास्विकर्मदवलेशः यधर्गः
 लीलालकारुणिर्गनस्याकसुमगेदिताश्रयगुर्णशामिसूधास्विरुज ॥ त्रसत्रकजपनमकुसाधकाविजिभन्दि
 यः ॥ षट्सदस्यपुश्रुदयात्यायसनससपिषा ॥ सामार्कपूजभपी ॥ पूजयथाहिनीपनि ॥ नृज्ञानिकगत्रपूः
 स्यसुदयः ॥ पनुमध्यगः ॥ बाहिनीकलिकाहयात्रवर्गरेवनीपुनः ॥ नातिनाद्वागभाक्तास्त्रीकलाहात्रसम

हा॥ सीतमात्राध्वनधवा, मुकाहानविह्वलः॥ अथाध्वनवाका ना, त्रविना अलयः॥ ७३॥ वल्लहासकामन
 धा, मदविह्वलममल्ला॥ समस्तः॥ ७४॥ अथाध्वनविनामनिहानना॥ अदित्यममलवधमन्यवाकपतिना
 रुवः॥ ७५॥ अथाध्वनयगापूकादलापयगाहान्मः॥ स्ववध्वयः॥ ७६॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ७७॥
 तनील, पीतधूमसिमासितः॥ वाभात्रयसुतद्वसा, दक्षिणनवगाहया॥ ७८॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ७९॥
 मूर्खः॥ ८०॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ८१॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ८२॥
 ग॥ ८३॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ८४॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ८५॥
 ती, तिस्रह्यमनूअपन॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ८६॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ८७॥

१०२

यन्॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ८८॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ८९॥
 यः॥ ९०॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ९१॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ९२॥
 ॥ ९३॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ९४॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ९५॥
 भा, दयादयीविधूयः॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ९६॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ९७॥
 धा, दयादयीविधूयः॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ९८॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ ९९॥
 हापयत्यनः॥ १००॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ १०१॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ १०२॥
 ॥ १०३॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ १०४॥ अथाध्वनामाध्वनीवका॥ अकात्रेणः॥ १०५॥

साधकः १४ समस्त ॥ नियमः ॥ किं तान् पूजान् सीराग्य म उल्लेख १४ । कन्या मिष्टमवाप्नोति कन्यापितृवमापूया
त ॥ वदना किमिहा केन सर्वयद्यानि जायते १४ । विद्या विद्यामालिनिद्या चन्द्रिथ कतगारुवत ॥ पूनश्च न्यवाय
स्वाहा विद्यामनु उवाच १४ ॥ ॥ तानाद्य निर्वृत्त १४ यथा कामकर्तुं विरुधित १४ वदना सनाम वक्ष्य १४ स
नशा विह्वलपश्चिम १४ नृणां कृत्रामन १४ प्राक्का रुना वलिमतपुद १४ धवरा गामन १४ प्राक्का गायत्री कृत्वा न्नीविता न्नीः
दित्या धवरा प्राक्का दृष्टा दृष्टतपुद १४ सत्या यद्यदयं प्राक्का वदना निन न्नीविता ॥ विष्णुवस्या द्वि स्वावर्म न
दायपत्रि कीर्तिना ॥ नृगयं नृगमायानं सर्वायामुमदा दत्ता ॥ न आ कालाम निर्वृत्त र्दृष्टाना १४ पत्रि कीर्तिना
१४ नृगमनु नृगमायानं पञ्चमूलीयथा कुर्म ॥ नृदिष्ट विनय नृदिष्ट वरिमुख गान्धर्वा ददथ हानूनात्मा

[illegible]

गृहं॥ जायते वत्सनायका ग्लक्ष्मीशेलाकभाहिनी। मनुष्यभनसुखी वर्याखाददिनागम॥ हानव
मूखाभुजसुनिव्यता। मृष्टरुनभार्जिऊर्मजलपान॥ पिबन्नव॥ ऊ० नागिर्कलकल्य कननेवकतागन॥
कस्तानवपदात्मानं मधुर्लयागुदी विग॥ कलसानवकन्यागन सुपयन्नाकवसेना॥ नीव॥ वददगुह
म॥ काथेस्तान्पूयथकुमात॥ वसुदिहिवर्लकल्यनववत्तानिदिपन॥ मध्यसंपूयथदिमि मूर्तिन॥ दि
मकुमान॥ कुरुषुगधपूषाथदुपदीपामनारु॥ सु॥ उयन्नव॥ केरु मर्तुम॥ रुवर्गती। नृहिचिष्य
त्यन॥ सांध्यविनीर्नदरुयकिर्दी॥ गरुडवमहाभाग दानिद्यादीनि विजुत्यस॥ जीवद्वर्षेनसम्यगहिषिक
॥ जियासरु॥ ॥ नृनिहीसावदागिलकवत्यसूर्यागिमनूनीयगुदग॥ पठल ॥ ॥ नृथवक्षसह

गदादात्रणाच्छुद्धं गीरीसीरीक्षी। गुदमनिमयविविधाकल्याणिउत्तिष्ठं ॥ मण्डलकं ऊपलभन्, यत्ननशुद्ध्या
लग्नं गत्वा सुसमिद्धं गी, भाषयद्दु वि (वाग्भृत्) ॥ नृव्यापी गी त्रिभयी ॥ १० ॥ मूलं मूलनकल्याणं ॥ अज्ञातं च वि
श्वकी, गीर्व्यापी कौकु, (मेषन) ॥ वरुणं कोमादकीरव, स्वकीयं षष्पूजयत् ॥ ११ ॥ अज्ञातं न दे मुनि, पूजयद्वा
श्रुतं सुधीः ॥ उर्वक्यात्पुनश्चर्या, मनुजाननमनुविता ॥ पथाग्नं कल्याणिर्दिष्टं न, कुर्यात्सुस्यपरास्यता ॥ नको
त्यलोमिमधुकोः ॥ सहस्रं शुद्ध्या नये ॥ नित्यमासाह्वयेष्टं, वत्सनादनधन्यवान् ॥ नकोमिमधुप्रापये ॥ पद्मी
हानसहस्रकी ॥ शुद्ध्या मर्हणी लक्ष्मी, मायुर्व्यामावापूयात् ॥ लाजा मिमधुप्रापयान्, यात ॥ कालेषु शुद्ध्या ॥
कन्यासिद्धिरुवत्सकान्, कन्यायाः ॥ सद्यः प्रारुवन् ॥ दूचाः ॥ पथोष्टुगाह्यका, द ॥ मण्डले स गी सुधीः ॥ नृवर्हं शुद्ध

यास्तस्य दीर्घमायनवापूयात् ॥ तस्य भागः पुनश्च निरुद्धा दाहादि हिः सह । पर्वताद्यप्युद्धया दपाः
 पामाग्न्यस्य मज्जती ॥ नित्यं स ह्यमानन सफाहं विजिभा न्दियः ॥ शमाय सर्वथा ह्युद्धया वागन पुना न्दियत ॥
 सुतिले वा श्रया माग्नौ रुविना श्रयार्थं कर्मा ॥ द्विसहस्रं पुरुद्धयात् कृत्वा वागगुहानयजत ॥ पथा क्व न मृतेना १३१
 ख ७३ किं वि स ह्युद्धयात् दिना ॥ अन्नन विहिता रुमा रुम क्व न विनो गेन ॥ नृसिंहः किं वीजे द्वा गूलतात्रा १४१
 मलिश्वरा ॥ नृगुहार्कसिंहा यजुष नर्क मज्जती ॥ नृविद्यस्य स्य स्य मृगं गुरुः कृत्वा न रुया कल ॥ नृलि
 ख्यागि पुन द्ययं न दूय न ॥ किं स साध्या निश्चतः षट् ॥ एष पुरुद्धया न्यथ मनोः किं कृत्वा स सुन सुवान् ॥ पथं
 दूय समनुवा उ विहित नृधुनि कुमा द्वा द ॥ को द्युनः ॥ पुन वा रु गी द्वा नि पुन को लो म विना मर्षि ॥ नात्र सिद्धिः

न्यधीः ॥ नृवाक्कमनूना विद्वान् श्यापकन समर्चयत ॥ रुग्ं नृनियतः स नृ वृद्धिवा ॥ पकीर्तिर्न ॥ कर्तुं कार्या
 यजुषा विधानेना नृदयता ॥ दलं पूजयत् ॥ नृवाक्कमनूना विद्वान् श्यापकन समर्चयत ॥ रुग्ं नृनियतः स नृ वृद्धिवा ॥ पकीर्तिर्न ॥ कर्तुं कार्या
 नगा ॥ नृवाक्कमनूना विद्वान् श्यापकन समर्चयत ॥ रुग्ं नृनियतः स नृ वृद्धिवा ॥ पकीर्तिर्न ॥ कर्तुं कार्या
 मनुमा कर्मनी विना ॥ दलं पूजयत् ॥ नृवाक्कमनूना विद्वान् श्यापकन समर्चयत ॥ रुग्ं नृनियतः स नृ वृद्धिवा ॥ पकीर्तिर्न ॥ कर्तुं कार्या
 स्वयं गा हिः समनृ हिः कथं नृमनयः कमात् ॥ नृवाक्कमनूना विद्वान् श्यापकन समर्चयत ॥ रुग्ं नृनियतः स नृ वृद्धिवा ॥ पकीर्तिर्न ॥ कर्तुं कार्या
 हाकानन नृभा मनुः ॥ स्य नृनमहायकः वाजा नृस्या द्वा द ॥ सर्वदृष्टं रुयं पथा क्व न विनयं गीष्टं ॥ विदाः
 नृयपद द्वा द पत्रमनुना गृह्यतः ॥ रुग्ं नृनियतः स नृ वृद्धिवा ॥ पकीर्तिर्न ॥ कर्तुं कार्या

॥ १ ॥ स्वप्न नीलपदानकस्या न्निन्दस्वद्युयमिष्टक ॥ यदुत्थयमनस्याक ॥ कीमादकिमहावल ॥ सर्वसिमाना कि
पयं पुसीदयुगवमरुह ॥ स्वाहाकार्यमनस्याक ॥ सहि ॥ कीमादकीपन ॥ अरुहानककटयुग ॥ पक्ष्यमननीनि
॥ २ ॥ सखलकानकमसलपागादि किमयिपुन ॥ कुरुद्विभनामकार्य ॥ सफर्म ॥ पत्रिकीर्तिन ॥ पागवधयुगिप
॥ दाकर्मययद्वय ॥ वद्विजायावधिसहि ॥ नरुभासकु ॥ गीविग ॥ लाक ॥ सत्पुजयत्यस्या ॥ द्वाशशनाय ॥ धे ॥
॥ ३ ॥ नक्तमखद्ययनिर्त्य ॥ यथावत्पुनरात्म ॥ न्याप्राप्तिमरुगलि ॥ श्रीराग्यमपुर्लयाग ॥ न्यायन्याग्यमेश्व
॥ यमनाहीकपनिनिन्दति ॥ द्यानिक्कुसुमेधवमच्चयितायथाविधि ॥ गजिपमूलेकुद्रया ॥ दक्ष ॥ रुवमद्वयक ॥ मा
॥ नमनिगवगगा ॥ सुखस्य ॥ सकलानुया ॥ कृताविलरुली ॥ यकी ॥ शियीवन्देनाननिन्दता ॥ पुरुहीवन्नाभ

[illegible]

[illegible]

रुमः॥मूर्द्धहाभादनाशिषु द्वादशेता॥पुनश्चसन्॥पश्चादभनमकुलं कूर्वीतयापर्कसूधी॥नभासुह
लुहनाय श्रुतिर्लिङ्गामृतानन॥वधुर्मूर्खिवपुः॥स्य रासिगन्नायगम्क॥१०॥वचसुगवीनासी ध्याय
रूपार्चनीपति॥ध्यायनिर्ह्यमहंनिकगतिविनिर्हवानुवदावर्षि नलाकल्या कलाङ्गपत्रमुगवना
हीतिहर्षपुसनमः॥यद्यासीनसमनास्तुतममनगलेयाद्युर्कवसानं विश्वाद्यंविश्वरूपनिश्च
लरुयहर्षपश्च वक्तुंनर्तुं॥तनूलर्क्षजयमर्तु दीक्षित॥नेयवर्मणा॥तावत्सर्वसहसावि रुद्रया
त्यायसे॥सू॥॥तन॥सिद्धाहवमकु॥साधकारिहृसिद्धिद॥धर्वसपञ्चयत्पी॥०॥वामादिनवगकिर्क
॥वामाश्चसुनताभोद्दी कालीकलपयादिका॥विकानिष्याकयाध्याका वलाद्याविकानिष्यथ॥वलप

मथनीयः सर्वरूपदमन्यथा मना ननीति संपाकाः ॥ (नेव पी०) एवमकथं ॥ नभारुगावर्गेष्वपि क
 लादिवत्तत्पुनः ॥ ७८ ॥ एतान् गच्छिष्यकाय नभाननाथगत्पुनः ॥ यागपी० भक्तनरूपानमस्तु ॥ दिकामनुशा
 मनामनुनादद्या दासनीगिनिजायता ॥ मूर्तिमूलनसंकल्प गणवायुयुक्तिर्वि॥ कर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी
 शमीशानादिगर्त ॥ ७९ ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८
 धा ॥ ११० ॥ वदुर्वकुसमायुका यथावत्पुजयन् ॥ क ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८
 निकश्वरकानि विद्युशानपुष्पानुयुक्त ॥ ११० ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८
 निमूर्तिमयनकर्त ॥ ११० ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८

१०८
 १०८

नागिनी ॥ किरीटाद्यित्तवालन्दन पद्मसुन्दरुषटान्वितान् ॥ शिभगुनु गूलवजा कुवापरुस्तमनावमान् ॥ ११०
 रुपादियुक्तपुष्पा ॥ ११० ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८
 गान्यद्रास्तिनस्तिगान् ॥ ११० ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८
 ॥ ११० ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८
 नमस्तु ननागुसंगय ॥ ११० ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८
 ॥ ११० ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८
 किन्तु ॥ ११० ॥ सुदृष्टिकर्तुंकार्यायुक्तमूर्तिनी ॥ दिकामनुशा ॥ पीगाभरन ॥ ध्यतवका ॥ पुधानसदृशाय ॥ १०८

शामसीगीविविक्तयत्॥ वन्द्यकार्हीनिर्गुणसकलधर्मसम्पन्नवर्कवर्नी, हस्ति॥ गूलकपालविलस
 मरुयदीवान्द्वाररुजामि। वामावसुम्भगया॥ कवगलविलसवान्कात्यलाया, हस्तिनागिष्ठदहमधि
 मयविलससुखलाया॥ पियाया॥ सफलकीऊपमर्क, नलहर्मयथाविधि॥ रुद्रयानमधुनासिकी, नान
 गवधममिद्वनेषाकपाकेपुऊयत्ती॥ गन्धपुष्पममापति॥ जहादहं दहि॥ पूरु, दहसुखायायथा
 विधि॥ मधुपागदकि, (लादीय) पश्चिमेषुविधानतः॥ दहसुखागगलावका, वरुधीवकनालिका॥
 महाकुष्माकमादता॥ र्पयहृतसमपुला॥ पाण्डुगववारीति, धात्रि, (ग्या) सिनहसला॥ यऊन्युदा
 दिपुण्य, वयराद्याननकुमान्॥ हिमालयार्हद्वर्ह, तीक्ष्णष्टक, जिलावनी॥ सच्चिदेवसन्दीप, साक्षा

१४०
 १४८

रुद्रस्ववृषिर्णी॥ कपालगूलविलस, कर्त्रकालचनपुर्ण॥ कृष्णपालीनिनयनीदिगम्बरमथाश्चयत्न॥ गूल
 टका, कवलय, कमलुललसकवम॥ वकाकार्हीनिनयनी, यलुगमधपूऊयत्न॥ वकर्णीस्वरुयाहीष्ट
 कर्त्रमकवतपुर्णी॥ दूगर्सीपूथसोम्या, निनगियावसुम्भणी॥ कल्याणोखविनयल्ला, दधानद्विद
 कर्णी॥ वालाकार्हीनिर्गुणकार्ही, वसुम्भपूऊयत्न॥ नन्दिनीपूऊयत्नीम्य, वल्लहसगमलुती। पत्राग्य
 गववारीति, धात्रिर्णीग्यामविगुर्ह॥ पाण्डुगववारीष्ट, धात्रिर्णीकृष्णपुर्ण॥ विद्यनायकमथ्य, च
 द्वाष्टकतहसली॥ ग्यामवर्कौत्तलकर्त्र, वामाङ्गन्यसुसकवनी॥ दिनगुत्रिकवफुर्श, धनापकिमथाश्चय
 त्॥ नगाष्टमागव॥ पूरु, वाक्कायाष्टीकलक्षण॥ ॐन्दादिका, लोकपालान्, स्वर्वादिद्वसमश्चयत्न॥

तद्वादीनिकदम्बानि तद्वदिः ८ कम (जायऊन् ॥ १ वथाऊऊनमन्ती दधर्गममापान ॥ सहयत्सर्वलोकानां पि
 यः १ शीहायसम्यद ॥ ॥ सानः १ सद्यानसंयुक्तो विन्दुरुषितमस्तकः ॥ पासादाश्चामनः १ पाका, रुऊनीसवे
 सिद्धिदः १ पय्यी दय्यकवाऊन, षड्विधिवित्रीविनः ॥ वामदयामुनिः १ न्य १ पीकिद्वयः १ सदागितः ॥ ॐ न
 नादीन्यऊनूली, ननु ह्यदिष्यदितिकः ॥ ॐ नानाख्यतत्त्वेषु सधार्मिकयननः ॥ वामदवाद्यसंयमासा
 दीऊकमादिदः ॥ उकावाद्यः १ पय्यदक्ष, विंलामात्ययुतवियत्, तद्वद्वहिलिह्य, सलदीऊदिकान्यस
 ॥ निवाद्यनदः १ रुक, पादद (जायथाकमात् ॥ उद्वृणोदकि, लदीवा, पय्यिमधुमस्वर्गी ॥ गतः १ पुविन्य
 भेदिदान्, हृदिगल्ललाहनी ॥ ॐ नानाद्यामेव १ सम्यग्गुलीष्यथाकमात् ॥ मूर्तु ह्यदिकनिष्पन्नं न्य

१३०

सद्गनिकसल्लसः १ मूर्द्धस्यदयाम् १ ऊ गुञ्जपादपूनाः १ पूनः १ वकुञ्जमुदिष्विग्रहस्थानज्ञानि
 कत्यथ ॥ तावर्पवकमद्याय सर्वस्वायद्वदीवित ॥ नमृगभञ्जामालीनि, रुफाथतिपदपूनः १ तदनव
 क्रसिनसे, निवाहुकलिर्गतः ॥ निखिनिखायप्रवणा, नादिवाधायतद्विखा ॥ वडि, (सवकुहस्यस्य
 तकायतनः १ द ॥ सोत्रोक्षमितिर्लक्ष्य, पत्रभालूफगकथा ॥ ननुयकीर्णीपुष्टुह, रुदनः १ ननः १ कथ
 ॥ नमुयकीषड्ज्ञानि, कयाधर्वसमाहितः ॥ पूर्वदक्षिणपाश्याय, सोम्यमध्यर्षवसू ॥ वकुर्वपववि
 न्यस, दीग्ननस्यकलाः १ कमात् ॥ ॐ नानः १ सर्वविद्यानां, गिनीपुथमाकला ॥ ॐ ध्वनः १ सर्वज्ञाना, स
 मद्दवातयननः ॥ वक्राधिपतिगदान्कवक्र, (लापिपतिः १ पूनः ॥ वक्राह्वारुणीयास्या, द्विनाममुक्तं १

पत्र ४। मन्त्री वि० कथिनागकु. वदुर्ध्वसदागिव ॥ नृ० सुमालिच्यंथपया पुनवाद्यानमाचिता ॥ पूर्वपश्चिमया
ध्यायक वकुषु गदननर्वा। वगुभा विचयननकी. पूषस्यकला ४ कमात् ॥ नृ० गान्त्यवसायति. विद्वद्भ्यानि
त्रीविकी। मरुदवायगद्यान. धीमही ४ स्यारुग ४ पर्व ॥ विद्या द्वितीया केथिता. रन्ना वृद्ध ४ पदगत ४ ॥ पुतिष्ठाक
थितापश्चा. र्गुनीया स्यात्ययादयात् ॥ निवृत्तिस्तथा ४ सर्वा पुनवाद्यानमाचिता ४ ॥ दृष्टीवसिधयनाली. क
क्षीष्टसर्वकसि ॥ नृ० ध्यावस्यकलोन्नास. दक्षीमेनीयथाविधि। नृ० ध्यावस्यसमापूर्व. मीत्रितापथमाकला ॥
नृ० ध्यावस्य ०० ल्यर्क मरुदवायगद्यान. धीमही ४ स्यारुग ४ पर्व ॥ नृ० ध्यावस्यकलोन्नास. दक्षीमेनीयथाविधि। नृ० ध्यावस्यसमापूर्व. मीत्रितापथमाकला ॥
नृ० ध्यावस्य ०० ल्यर्क मरुदवायगद्यान. धीमही ४ स्यारुग ४ पर्व ॥ नृ० ध्यावस्यकलोन्नास. दक्षीमेनीयथाविधि। नृ० ध्यावस्यसमापूर्व. मीत्रितापथमाकला ॥

[illegible]

यास्तननासासमूर्द्धिवाधमस्वचसम् ॥ सधाजाभाह्वाऽसम्य गच्छेमकीकलाऽकमान् ॥ सधाजानप्यधामि
 सिद्धिऽस्यागुपथमाकला ॥ सधाजानायवेह्या नमऽस्यादृष्टिनीत्रिणा ॥ हवत्युगिहगीयाह्या दहयलदन
 कवम् ॥ लक्ष्मीवसुधीकथिता गमानादिहवपदम् ॥ मिधास्यात्यवमीपाका कलाह्यारुजस्वमी ॥ एहासमी
 त्रिणाषष्टी हवार्कस्यागुपहाकला ॥ उहवायनमऽपद्या स्वधास्यादक्षमीकला ॥ पुनवाद्याऽवसुर्थनाऽकलाऽ
 सर्वानमादिका ॥ नक्षत्रिणकलाऽपाकाऽपयवकाकलादिका ॥ वृत्तिन्यसुगत्रीत्रासी हवज्जज्ञधनह्ययो
 नतऽसमाहिभाह्वाध्यायद्वयसदागिर्य ॥ मकापीगपयादमीकि कजवावलेमूर्खेऽपवारि सुक्षेत्रधि
 नमिन्दमूर्कपूषुन्दकोटिपुर्ज ॥ गूलट कट्टपादावकु यहनानागलुद्यव्या कृष्णम् पानाहीतिवचान्धधान

152

नमामिगाकलाक्षत्रीचकथ ॥ नर्वधाह्वाजपचर्तु पयलकर्मधूपुपुनेऽपसुनेऽकवर्वावाकि कृदयालदशांगिक
 ॥ पुष्पादिभयकत्पी ॥ १० ॥ मूर्तिमूलनकल्यथ ॥ नवाद्यपूजयलेह्या मूर्तिमावत्र (ले) ॥ ११ ॥ नाकिं यमव
 काहीतिवचानसीविरुक्तिक ॥ १२ ॥ वृत्तिगान्त्रीकिर्ण हुरु मेगान्यादिनिपूजयत् ॥ पत्राऽवतवाहीतिद्व
 धानीविद्युद् काल ॥ यदुम्बरवस्तुनर्व विनर्गपूवभाचयत् ॥ नक्षत्रपूजयदपाहो गूलटुमयकनक
 ॥ खद्याङ्गनिर्गर्गूल कालाविदुर्गकथ ॥ नृजनाह्वयवुर्गकी हीमदुष्टरुयाचरु ॥ सधात्रीकीकलीया
 य पूजयमकुविलसहा कृष्णमारुवदुर्वकी वामद्वीगिलावन ॥ वनारुयाकवलय कभनदधरकि ॥
 विलासिनसिन्धुमख्य धर्मसम्यक् समव्यथ ॥ कपूचन्दुनिहसोम्य सधाजानुलावनी ॥ हविष्मक

[illegible]

पाकपी॥०मूलमन्त्रेण मूर्तिर्भक्त्या पूजयन् ॥ नृसिंहाय नमः ॥ उमादिहि ४ समष्टि
हृत्कीर्त्यलोकनायक ॥ बहु धर्मपथमेषां सायुधे ४ पत्रिकीर्तिता ॥ १ वृत्तिदिनद्वयं पूजयत्ता ४ का
लम ॥ पूजयिष्यादिसहिर्नां धिर्यपाप्य भायगा ॥ ॥ गार्गीहिवासकधुन्दु ४ सर्गिदिहृषिक ४ ग्रा
कवात्मानिगदिना मनुमत्य ऊर्यात्मक ४ ॥ मषि ४ कदाहालायवीत्या गायत्रीकन्दगीत्रिर्त्त ॥ मृत्य ऊर्या
महायवा दवतास्यसमीत्रिगा रुद्र नदीर्द्ययर्केन प्ररुद्रा निमसायवत ॥ वन्द्य कार्त्तिकविभायनीस्मिन्म
ख्यपम्बदवानकस्मिन् मूढापागमगाकसूत्रविलसत्यार्त्तिहिर्मांशुपुहम कोठीत्रन्दलसत्पुधापुनगनूहावा
दिहृषाकूर्त कार्त्तिकविन्धविभाहर्नपहुपनिमृत्य ऊर्याहायथ ॥ ४ ॥ ललक ऊपत्तर्क गदगांणीविभायवी ॥

रुद्रयादमन्त्राखले, मधुनाश्रुविलासि ॥ १० ॥ मूर्तिमूलनकल्पयन् ॥ नृणां वनमात्रा
 ध्यापयन् शक्तिं चान्यथ ॥ तदश्रुतिनावाश्रयपूजयन् साधकात्म ॥ जयपूजादिभिः ॥ सिद्धं तत्कस्मिन्
 ननामना ॥ कुर्यात्पुत्रो गन्तव्ये कल्याणं नहीष्टरुतसिद्धय ॥ दग्धसिक्के सुधाखले मन्त्री सार्धं सह मुक्ता ॥ नृ
 नाधिनामो रुद्रया, द्विषित्विद्विभिर्द्विषयः ॥ संपुष्टः ॥ क्षत्रभूत सुधाया विना विग्रहः ॥ नृयूनप्राग्य
 संप्रति ॥ यः ॥ पूजान् विवद्वयन् ॥ मन्त्रा - वरीणितादूर्वा ययः ॥ संप्रति ॥ यथाह वि ॥ नृयूकः ॥ सफहिद
 यो रुद्रयात्मकवासने ॥ कृतादनेन नित्यं सध्वजं नृनद्विषः ॥ सफाधिकान् द्विजानिर्ह्य हाजयन् मधुना
 विर्ण ॥ विहावार्थं गुणमन्त्री वदयद्वासवान् ॥ हाहृष्टादकिर्णदया दन्तेर्गां ॥ ययस्त्रिनी ॥ १० ॥ पुन

संप्रति यत्पुत्रा दनाद्यो देवताप्रिया ॥ नृननविधिना साध्यः ॥ रुद्रयादाह कृत्रा हि दि ॥ विमृक्तः ॥ सुविमर्जीवः ॥
 नदीनामसंज्ञा ॥ नृतिवात्रकृत्रा वृद्धा नानादयनिर्वागय ॥ नृसाध्यायाद्यो भाहृदाहमहाहृथ ॥
 हासार्यं नानिद ॥ पाकः ॥ सर्वस्य पुत्रदायकः ॥ यद्येव ॥ पुरुद्रया, विजनास्त्रयथाविधि ॥ हाजयन् मधुना ॥
 वाक्कलान् वदपात्रगान् ॥ दीर्घमायनवाप्राप्ति वाक्किर्णवन्दनिर्गिर्या ॥ एकादशः ॥ कृत्रा निर्ह्य दूर्वा हि कृद्रया
 दध ॥ नृपमयः ॥ विमर्षया, दायनायायवर्द्धन ॥ विजनास्त्रयथाविधि ॥ काष्ठीवीचवन्दनाहृथ ॥ समिद्धने ॥
 रुद्राहा ॥ सवमयः ॥ गदापद ॥ सिद्धा ॥ विहिमोहामा महा कृत्रविनाशन ॥ नृपासार्गसमिद्धास ॥ सवमिष
 निमुदन ॥ पुनवदिगता साहं मनुज्याहृपुर्ण, हृपुविनासि तमर्धपदयुग्मं तदन ॥ कृत्रवसति मम ॥ वधु

[illegible]

॥ वटमूलपदस्थान् पदपञ्चानिवसिन ॥ ध्यानकलिवगा ज्ञाय पञ्चाङ्गयानमः पदी । नृदायशम्वरुदाय ॥
किन्नायमीविगः ॥ पद्विंशदक्षत्रामक्तः सर्वकामरुतपदः ॥ मनिः ॥ कुकः ॥ समदिष्टः ॥ चन्दनद्वयसम
वितः ॥ दक्षिणामूर्तिनामास्यः यवगा ॥ कुन्दीविगः ॥ पश्चिमे (लुक्) ददाख्यातः दक्षिणिवउदाद्यतः ॥ गिरवा
ष्टहिः ॥ समादिष्टः तस्व (लुक्) कवचमर्तः । पविहर्त्तुमाख्यातः किरिषष्टमदीविगी ॥ पञ्चभक्तान्नगच्छाद्याः दा
दाद्याद्याः ॥ सकागयः ॥ नृक्षमक्तः ॥ समद्वयः यथावद्विगिकात्मः ॥ मूर्द्धिराष्ट (गः) ॥ गलुयः ॥ गमस
नासिकः ॥ नृस्थदाः ॥ सन्धिषुगले स्तनदन्त्राहिसुले ॥ कर्द्यागुष्मपूतः पादः सन्धिषुगुनिन्यः सननाः
द्यापकतात्रगकिह्याः कूर्याद्वरुगः ॥ पत्रः ॥ रुसाद्यलग्नः ॥ यथैष्टिः किन्नरसंविगः ॥ विविधद्वयसंखारि

४ सद्यो भावा निगामय ॥ सपथो नैव लूना जाले, बाह्येष्ट कुमसदुभ ॥ निलानि वन निर्गच्छ, निर्जनानि वनी गत
 ॥ गमय हृन्नाङ्गना सिद्धि, नृत्त्यद्वय कय मवका। कूज ककिल सद्येन, मुखवीरुत दिद्वय ॥ पत्रस्यत्र विनिर्मूक
 मार्यमृग सवित ॥ नृद्यो ४ ७ काद्यो मनिहि, नृज्यसमप सिद्धि ॥ पत्रन्यत्र मश्येष्ट ४ सवायाहे चित्ता किना। व
 ट्ट द्रमना कार्य, पत्रवागदुला कल ॥ गमन लममथ ४ पत्र, निविले नृप (ग। हिर्ग ॥ नव वल्लमया कल्य, नृम
 माने वल्लदुर्ग ॥ जलज ४ कलज ४ पत्र, वात्सादि हि वल्लदुर्ग ॥ गल विद्येष्ट यम सुनि, शुक्रद्वन्द्वे निध विर्ग ॥ स
 सावगाय विद्येष्ट, कल कलयमदुर्ग ॥ विवि नृगस्य मूलसु, वल्लसिद्धासन ४ ७ ॥ नृसीनममिना कल्य, नव
 चन्द्र निहानन ॥ नृयमात्मम निगली, दिव्यसुना रिता सिद्धि ४ सस्र वक्र गता माद्य, दक्षिणामूर्ति मय्य

१५६

आर्य समाज
ASHA ARCHIVES

2.127

I

३३